आज़ादी का
अमृत महोत्सव
1947-2022

सामाजिक विज्ञान

अभ्यास पुस्तिका

वेद-भूषण - II वर्ष / प्रथमा - II वर्ष / कक्षा सातवीं

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद संस्कृत शिक्षा बोर्ड

(शिक्षा मन्त्रालय भारत सरकार द्वारा स्थापित एवं मान्यता प्राप्त)

द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष शान्तिः पृथिवीशान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः ॥
व्वनस्प्पतयः शान्तिर्व्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः सर्व्वं शान्तिः
शान्तिरेवशान्तिः सामाशान्तिरेधि ॥
यां रक्षन्त्यस्वप्ना विश्वदानीं देवा भूमिं पृथिवीमप्रमादम्।
सा नो मधु प्रियं दुहामथो उक्षतु वर्चसा ॥
यार्णवेधि सलिलमग्र आसीद्यां मायाभिरन्वचरन्मनीषिणः।
यस्या हृदयं परमे व्योमन्त्सत्येनावृतममृतं पृथिव्याः।
सा नो भूमिस्त्विषिं बलं राष्ट्रे दधातूत्तमे ॥
मधुव्वाताऽऋतायतेमधुक्षरन्तिसिन्धवः।
माद्धीर्न्नः सन्त्वोषधीः ॥
मधुनक्तमुतोषसोमधुमत्त्पार्त्थिवं रजः ॥ मधुद्यौरस्तुनः पिता ॥
मधुमान्नोव्वनस्प्पतिर्म्मधुमाँ२ ॥ ऽअस्तुसूर्य्यः ॥ माद्धीर्ग्गावोभवन्तुनः ॥
मातृतमा विषस्य स्थातुर्जगतो जानित्री।

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन (म.प्र.)

(शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार)

Phone : (0734) 2502266, 2502254, E-mail : msrvvpujn@gmail.com, website - www.msrvvp.ac.in

विषयानुक्रमणिका

क्रम संख्या	अध्याय का नाम	पृष्ठ संख्या
	भूगोल	
1	हमारी पृथिवी	3-6
2	हमारा पर्यावरण	7-9
3	प्राकृतिक वनस्पति एवं जैव विविधता	10-11
4	मरुस्थल में जीवन	12-14
5	मानवीय पर्यावरण एवं अन्योन्य क्रियायें	15-17
	इतिहास	
6	वीं सदी के मध्य हुए परिवर्तनों को समझना 18 वीं से 7	18-20
7	मध्यकालीन भारत- नए राजवंशो का उदय	21-26
8	मध्यकालीन भारतीय वास्तुकला	27-28
9	जनजातीय और यायावर समुदाय	29-30
10	मध्यकालीन भक्ति आंदोलन और क्षेत्रीय संस्कृतियों का उदय	31-33
11	अठारहवीं शताब्दी के क्षेत्रीय राजनीतिक शक्तियाँ	34-35
	नागरिक जीवन	
12	स्वास्थ्य और सरकार	36-37
13	राज्य शासन की कार्य प्रणाली	38-39
14	सञ्चार माध्यम और विपणि (बाजार) :की समझ	40
15	समानता एवं लिंग बोध	41
	परिशिष्ट	42-43

अध्याय–1

हमारी पृथिवी

- हमारी पृथिवी एक के ऊपर एक संकेद्री परतों से मिलकर बनी हुई है। ऋग्वेद में उल्लेख है कि **पृथिव्याः सप्त धामभिः।** (1.22.16) अर्थात् पृथिवी सात प्रकार के धामों (परतों) से बन्धी हुई है।
- अथर्ववेद में कहा गया है कि- श्याममयोस्य मांसानि लोहितमस्य लोहितम्। (11.3.7) इस मन्त्र में लोहे को पृथिवी का मांस एवं ताँबे को पृथिवी का रक्त बतलाया गया है।
- आधुनिक भू-वेत्ताओं ने भी पृथिवी की आन्तरिक संरचना को तीन भागों में बाँटा है-

  1. भू-पर्पटी 2. मैंटल 3. क्रोड।
- पृथिवी के ऊपरी भाग जो मुख्यत: बेसाल्ट चट्टानों से निर्मित है, को भू-पर्पटी कहते हैं। भू-पर्पटी महाद्वीपीय क्षेत्रों में लगभग 35 कि.मी. तथा सागरीय तटों मे 5 कि.मी. की गहराई तक है।
- भू-पर्पटी के दो भाग हैं- सियाल (SIAL) और सीमा (SIMA)। सियाल क्षेत्र में सिलिका, एलुमिना एवं सीमा क्षेत्र में सिलिकन एवं मैग्नेशियम की बहुलता है। भू-पर्पटी के नीचले भाग को मैंटल कहते हैं। यह लगभग 2900 कि.मी. की गहराई तक फैला होता है।
- पृथिवी की सबसे आन्तरिक परत क्रोड होती है, जिसकी त्रिज्या लगभग 3500 किलोमीटर है। पृथिवी का क्रोड भाग मुख्यत: निकिल और लोहे की बनी होती है, जिसे निफे (नि-निकिल+फे-फेरस) कहते हैं।
- क्रोड का तापमान एवं दाब काफी उच्च होता है। यहाँ पर पदार्थ लगभग द्रव अवस्था (मैग्मा) के रूप में पाये जाते हैं।
- पृथिवी का व्यास 12742 कि.मी. हैं। पृथिवी के आयतन का 1% भाग भू-पर्पटी, 84% भाग मैंटल और 15% भाग क्रोड हैं।
- पृथिवी की शैलों की परतों में दबे मृत पौधों एवं जीव-जन्तुओं के अवशेषों को जीवाश्म कहतें हैं।
- पृथिवी की आन्तरिक संरचना का ज्ञान हमें शैलों के घनत्व, भू-गर्भिक ताप, ज्वालामुखी क्रियाएँ तथा भूकम्पीय तरंगों के आधार पर प्राप्त होता है। इन्हें पृथिवी की विवर्तनिक शक्तियाँ भी कहते हैं।
- पृथिवी की भू-पर्पटी बनाने वाले खनिज पदार्थों के किसी भी प्राकृतिक पिण्ड को शैल कहते हैं। शैलों को मुख्यत: तीन भागों में बाँटा गया है- 1. आग्नेय शैल 2. अवसादी शैल 3. कायान्तरित शैल।
- आग्नेय शैलों का निर्माण ज्वालमुखी उद्गार के समय पृथिवी के गर्भ से निकलने वाले लावा (मैग्मा) के ठण्डा होकर ठोस हो जाने पर होता है।
- आग्नेय शैल दो प्रकार के होते हैं- बहिर्भेदी आग्नेय शैल एवं अन्तर्भेदी आग्नेय शैल।

- जब लावा पृथिवी के आन्तरिक भाग से निकलकर सतह पर आ जाता है और ठोस रूप धारण कर लेता है तो इसे बहिर्भेदी आग्नेय शैल कहते हैं। बेसाल्ट शैलें, बहिर्भेदी आग्नेय शैल का अच्छा उदाहरण है। भारत में दक्षिण का पठार बेसाल्ट शैलों से निर्मित है।
- द्रवित लावा कभी-कभी भूपर्पटी के अन्दर ही ठण्डा हो जाता है, तो ऐसे बने ठोस शैलों को अन्तर्भेदी आग्नेय शैल कहते हैं। ग्रेनाइट पत्थर, अन्तर्भेदी आग्नेय शैल के उदाहरण है।
- जब शैल टूटकर छोटे-छोटे टुकड़ों में विभक्त होकर एक स्थान पर परत के रूप में जमा होकर ठोस रूप धारण कर लेते हैं, तो उन्हें अवसादी या परतदार शैल कहते हैं। बलुआ पत्थर, चूना पत्थर, कोयला, स्लेट, नमक की चट्टान, शेलखरी आदि अवसादी शैल के उदाहरण हैं।
- दामोदर नदी, महानदी तथा गोदावरी नदी की बेसिनों में स्थित अवसादी चट्टानों में कोयला पाया जाता है। अधिकांश जीवाश्म एवं खनिज तेल, अवसादी शैलों में पाये जाते हैं।
- जब आग्नेय या अवसादी शैल ताप, दाब एवं रासायनिक क्रियाओं के कारण वलित या भ्रंसित होते हैं, तो कायान्तरित शैल का निर्माण होता है। स्लेट, शिस्ट, क्वार्टजाईट, संगमरमर, नीस आदि कायान्तरित शैल के उदाहरण हैं।
- पृथिवी के केन्द्र की गहराई अनुमानत: समुद्र की सतह से छ: हजार किलोमीटर है, जहाँ मानव का पहुँचना असम्भव है। विश्व की सबसे गहरी खान (4 किलोमीटर) दक्षिण अफ्रीका में स्थित है।
- पृथिवी की स्थलमण्डलीय प्लेटें सदैव गतिशील हैं। इसका कारण पृथिवी के आन्तरिक भाग में मैग्मा का वृत्तीय रूप में गतिशील होना है। पृथिवी के प्लेटों की गति वर्ष में लगभग कुछ मिलीमीटर होती है, इसके कारण पृथिवी की सतह में भी परिवर्तन होता है।
- पृथिवी की गति में प्रयुक्त होने वाले बल दो प्रकार के होते हैं- 1. अन्तर्जनित बल (एंडोजेनिक फोर्स) 2. बहिर्जनित बल (एक्सोजेनिक फोर्स)।
- पृथिवी के आन्तरिक भाग में घटित बल को अन्तर्जनित बल (एंडोजेनिक फोर्स) कहते हैं। अन्तर्जनित बल कभी तेज गति तो कभी धीमी गति उत्पन्न करते हैं, जिसके कारण पृथिवी पर ज्वालामुखी एवं भूकम्प जैसी प्राकृतिक आपदाएँ आती हैं।
- पृथिवी की सतह पर उत्पन्न होने वाले बल को बहिर्जनित बल (एक्सोजेनिक फोर्स) कहते हैं।
- पृथिवी के धरातल पर वह दरार या छिद्र जिससे समय-समय पर पृथिवी के अन्दर से तप्त लावा, गैसें, भाप, आदि बाहर निकलता है, उसे ज्वालामुखी कहते हैं।
- क्रियाशीलता के आधार पर ज्वालामुखी को तीन भागों में बाँटा जा सकता है-

  1. सक्रिय ज्वालामुखी 2. प्रसुप्त ज्वालामुखी 3. शान्त ज्वालामुखी।

- वे ज्वालामुखी जिनके मुख से निरन्तर धुआँ, लावा, गैस, धूल आदि पदार्थ निकलते रहते हैं, तो उसे सक्रिय ज्वालामुखी कहा जाता है। इटली का विसुवियस तथा भू-मध्यसागर का स्ट्रम्बोली सक्रिय ज्वालामुखी के उदाहरण हैं।
- जो लम्बे समय तक शान्त रहने के पश्चात् अचानक सक्रिय हो उठते हैं, प्रसुप्त ज्वालामुखी कहलाते हैं। जापान का फ्यूजीयामा ऐसा ही ज्वालामुखी है।
- अब निष्क्रिय हो चुके ज्वालामुखी, शान्त ज्वालामुखी कहलाते हैं। अफ्रीका का किलिमञ्जारो, ईरान का कोहू सुल्तान शान्त ज्वालामुखी हैं।
- ज्वालामुखी उद्गार के अन्य रूप- 1. गीजर 2. उष्ण स्रोत 3. धुँआरे हैं।
- भूमि छिद्र से होकर भूमिगत जल स्रोतों से वाष्प और गर्म जल का तीव्र निकास गीजर कहलाता है। संयुक्त राज्य अमेरिका में स्थित येलोस्टोन पार्क का ओल्ड फेथफुल इसका उदाहरण है।
- उष्ण स्रोतों से निरन्तर वाष्प और जल प्रवाहित होता रहता है, जैसे लद्दाख का पुगा, बिहार में राजगीर, हरियाणा में सोना नामक स्थान आदि उष्ण स्रोत के उदाहरण हैं।
- जब पृथिवी की सतह कम्पित होती है, तो उसे भूकम्प (EARTHQUAKE) कहते हैं।
- भूकम्प की विश्व में तीन प्रमुख श्रृंखलाएँ- प्रशान्त महासागर तटीय क्षेत्र, मध्य महाद्वीपीय क्षेत्र एवं मध्य अटलाण्टिक क्षेत्र हैं।
- भारत में हिमालयी क्षेत्र, कच्छ का रन, दिल्ली, महाराष्ट्र, जम्मू और कश्मीर आदि भूकम्प की दृष्टि से सर्वाधिक संवेदनशील क्षेत्र हैं।
- ज्वालामुखी क्रिया, भू-पटल में वलन एवं भ्रंसन, आन्तरिक गैसों का विस्तार, भूसन्तुलन में अव्यवस्था, भू-पटल में सिकुड़न, भू-विवर्तनिक प्लेट एवं मानव जनित कारक भूकम्प के प्रमुख कारण हैं।
- भूकम्प की तीव्रता भूकम्पलेखी (सीस्मोग्राफी) नामक यंत्र से मापी जाती है। भूकम्प की तीव्रता मापन के लिए रिक्टर पैमाना का प्रयोग किया जाता है।
- नदियों द्वारा अपरदन, परिवहन एवं निक्षेपण की क्रिया से निर्मित स्थल आकृतियों को नदी निर्मित स्थलाकृतियाँ कहते है।
- जब नदियों को लम्बवत कटाव से वी (V) आकार की घाटी का निर्माण होता है तो उसे **गार्ज** एवं **कैनियन** कहते है। जब नदियों का जल उँचाई पर स्थित खड़े ढाल से वेग पूर्वक नीचे गिरता है, तो उससे **जल प्रपात** या **झरने** का निर्माण होता है।
- जब कठोर शैलों का ढाल नदी के साथ मिलता है तो **क्षिप्रिका** का निर्माण होता है। जब नदी के प्रवाह मार्ग में जल दाब एवं घर्षण की क्रिया होता है तो गर्तों का विकास होता है, जिसे **जलगर्तिका** कहते हैं।

- नदियों द्वारा पर्वतों के तल के पास जब नदियों द्वारा अर्द्ध वृत्ताकार रूप में निक्षेपण होता है तो उसे **जलोढ़ पंख** कहते हैं। नदी घाटियों के दोनों किनारों पर पुनर्युवन के कारण निर्मित सीढ़ीदार संरचना को **नदी वेदिका** कहा जाता है।
- नदी जब मैदानी भागों में आती है तो उसके बहाव में अनेक मोड़ आते हैं, इसे **नदी विसर्प** या **नदी मोड़** कहते हैं। जब नदियों के विसर्प बड़े हो जाते हैं तो **गोखुर झील** या **झाड़न झील** का निर्माण होता है।
- नदियों द्वारा बहाकर लाई गई गाद व मिट्टी जमकर समतल मैदान का निर्माण करती हैं तो उसे **बाढ़कृत मैदान** कहा जाता है।
- जब नदी अपने साथ बहा कर लाए गए अवसाद को समुद्र तट पर छोड़ती है, तो त्रिभुजाकार आकृति का निर्माण होता है, उसे **डेल्टा** कहते हैं। भारत में ब्रह्मपुत्र नदी के मुहाने पर स्थित सुन्दरवन का डेल्टा विश्व प्रसिद्ध है।
- जो नदियां अपनी जलधारा को तीव्र वेग से सीधे समुद्र में गिराती हैं, ऐसी नदियों के मुहाने को **ज्वारनद मुख** कहते हैं।
- बर्फ की नदियों को हिमानी नदियाँ कहते हैं। हिमानी के अपरदन और निक्षेपण द्वारा U आकार की घाटी, लटकती घाटी, हिमगह्वर, हिमोढ़ स्थलाकृतियों का निर्माण होता है।
- पवन के अपरदन और निक्षेपण से छत्रक शिला, इन्सेल वर्ग, बालू का टीला, स्तम्भ, यारडंग एवं ज्यूगेन नामक स्थलाकृतियों का निर्माण होता है। चीन का विशाल लोएस का मैदान इसका उदाहरण है।
- समुद्री लहरों के लगातार तट से टकराने के कारण भू-शैलों में दरार पड़ जाती है और धीरे-धीरे ये दरारें चौड़ी होकर समुद्री गुफा का रूप ले लेती हैं जो **तटीय मेहराब** कहलाती हैं।
- समुद्री जल के ऊपर लगभग ऊर्ध्वाधर उठे हुए ऊंचे शैलीय तटों को **समुद्री भृगु** कहते हैं। समुद्री लहरें तटों पर अवसाद जमा कर **समुद्री पुलिन** का निर्माण करती हैं।

अध्याय- 2

हमारा पर्यावरण

- पर्यावरण फ्रेन्च भाषा के ENVIRONMENT शब्द का हिन्दी रूपान्तरण है। पर्यावरण शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग डॉ. रघुवीर द्वारा "कम्प्रिहेंसिव इंग्लिश-हिन्दी" डिक्शनरी में किया गया। हमारे चारों ओर विद्यमान वातावरण, वस्तुएँ, परिस्थितियाँ आदि को संयुक्त रूप से **पर्यावरण** कहते हैं।
- पर्यावरण के अजैविक और जैविक दो भाग हैं। अजैविक भाग में हवा, पानी, मिट्टी तथा खनिज, जलवायु और सौर ऊर्जा शामिल हैं। जैविक भाग का निर्माण पौधों, जानवरों, विभिन्न जीवाणु आदि शामिल हैं।
- पर्यावरण के जैविक और अजैविक घटक आपस में अन्त: क्रिया कर एक तन्त्र स्थापित करते है जिसे हम **पारिस्थितिकी तन्त्र** कहते हैं।
- भौतिक भूगोल की दृष्टि से पृथिवी पर स्थित पर्यावरण के दो प्रमुख घटक हैं- प्राकृतिक पर्यावरण और मानव निर्मित पर्यावरण।
- जल, वायु, भूमि, जीव-जन्तु, पेड़-पौधे आदि मिलकर प्राकृतिक पर्यावरण का निर्माण करते हैं। प्राकृतिक पर्यावरण के प्रमुख भाग- स्थल मण्डल, जल मण्डल, वायु मण्डल एवं जैव मण्डल हैं।
- पृथिवी का वह भाग जिस पर पर्वत नदियाँ, पठार, मैदान आदि विभिन्न रूप में पाये जाते हैं, **स्थल मण्डल** कहलाता है। यह पृथिवी के लगभग 29 प्रतिशत भाग पर विस्तृत है। यह जीव मण्डल का सबसे महत्वपूर्ण भाग है।
- पृथिवी के लगभाग 71% भाग पर जल है, जिसे **जल मण्डल** कहते हैं। इसमें सागरों और महासागरों के अतिरिक्त नदियाँ, झील एवं भूमिगत जल भी शामिल है।
- पृथिवी की सतह पर उपलब्ध 97% जल खारा है, जो सागरों-महासागरों में स्थित है। शेष 3% जल पीने योग्य है, जिसका 2.4% जल ग्लेशियरों, उत्तरी और दक्षिणी ध्रुवों में जमा है। 0.6% जल नदियों, झीलों और तालाबों में स्थित है।
- सागरों एवं महासगरों का जल सदैव गतिमान रहता है। इनकी गतियों को मुख्यत: तीन श्रेणी में विभाजित किया जा सकता है- तरंगे, ज्वार-भाटा एवं महासागरीय धाराएँ।
- जब सागरों एवं महासगरों की सतह पर जल निरन्तर उठता और गिरता है तो, उसे जल तरङ्ग कहते हैं। सागरों के अन्दर उत्पन्न भूकम्पीय लहरों को सुनामी कहते हैं।
- 26 दिसम्बर सन् 2004 को हिन्दमहासागर में उठी सुनामी तरङ्गें अति विनाशकारी थी, जो उस भूकम्प का परिणाम था, जिसका अधिकेन्द्र सुमात्रा की पश्चिमी सीमा में था। भारत में आन्ध्रप्रदेश के तटीय क्षेत्र, तमिलनाडु, केरल पुद्दुचेरी तथा अन्डमान और निकोबार द्वीप समूह सर्वाधिक प्रभावित हुए थे।

- समुद्र में प्रतिदिन नियमित रूप से जल का लहरों के रूप में उठना एवं गिरना **ज्वार-भाटा** कहलाता है। पूर्णिमा, अमावस्या और ग्रहण काल में समुद्र में अधिक ऊँचाई वाले ज्वार आते हैं।
- सामान्यत: भूमध्य रेखा के निकट गर्म महासागरीय धाराएँ पैदा होकर ध्रुवों की ओर बहती हैं, जिन्हें **गल्फस्ट्रीम** या **गर्म जलधारा** कहते हैं। अलास्का धारा, एल नीनो धारा आदि गर्म जलधाराएँ हैं।
- उच्च अक्षाशों से निम्न अक्षाशों की ओर बहने वाली जल धाराओं को **ठण्डी** या **शीत जलधारा** कहते हैं। लेब्राडोर धारा, क्यूराल धारा, हम्बोल्ट धारा आदि शीत महासागरीय धाराएँ है।
- पृथिवी के चारों ओर जो गैसीय आवरण है, उसे **वायुमण्डल** कहा जाता है। वायुमण्डल में विविध गैसें जैसे- नाइट्रोजन (78%), ऑक्सीजन (21%), और आर्गन (0.9%) कार्बन डाइऑक्साइड, हाइड्रोजन, हीलियम और ओजोन आदि के साथ जलवाष्प व धूल के कण भी विद्यमान हैं। ये सभी जीवधारियों के लिए आवश्यक हैं।
- पृथिवी की सतह से ऊपर की ओर वायुमण्डल की पाँच परतों है-

  1. क्षोभमण्डल 2. समतापमण्डल 3. मध्यमण्डल 4. बाह्यमण्डल 5. बहिर्मण्डल।
- **क्षोभ मण्डल** की औसत ऊँचाई पृथिवी की सतह से लगभग 14 से 18 कि.मी. है। मौसम सम्बन्धी घटनाएँ जैसे- श्वसन, कोहरा, वर्षा, ओलावृष्टि आदि इस परत में होती हैं।
- वायुमण्डल में लगभग 16 से 50 कि.मी. की ऊँचाई तक विस्तृत क्षेत्र **समताप मण्डल** कहलाता है। समताप मण्डल में तापमान समान रहता है, अत: यह भाग वायुयानों की उड़ान के लिए उपयुक्त है। समताप मण्डल में ओजोन गैस की परत होती है, जो सूर्य से आने वाली हानिकारक विकिरणों का शोषण कर हमारी रक्षा करती है।
- समताप मण्डल के ऊपर लगभग 80 किलोमीटर की ऊँचाई तक **मध्य मण्डल** का विस्तार है। अन्तरिक्ष से आने वाले उल्कापिंड इस परत में जल कर नष्ट हो जाते हैं।
- मध्य मण्डल के बाद लगभग 80 से 400 किलोमीटर तक विस्तृत परत **आयन मण्डल** कहलाता है। पृथिवी से प्रसारित रेडियो तरङ्गें आयनमण्डल के द्वारा पुन: पृथिवी पर परावर्तित कर दी जाती हैं।
- हमारे वायुमण्डल में अन्तिम विस्तृत परत को **बहिर्मण्डल** कहते हैं। यहाँ पर वायु बहुत विरल रूप में मिलती है तथा हीलियम एवं हाइड्रोजन गैस प्रचुर मात्रा में मिलती है।
- वायुमण्डल में नित्य प्रतिदिन के स्थिति को **मौसम** कहते हैं, उदाहरण के लिए आर्द्र, शीत, गर्म और शुष्क मौसम आदि। लम्बे समय तक पृथिवी के किसी क्षेत्र के औसत मौसम को **जलवायु** कहते हैं।
- वायु में उपस्थित ताप एवं शीत के परिणाम को तापमान कहते हैं। तापमान मापन की मानक इकाई डिग्री सेल्सियस है। तापमान को मापने के लिए तापमापी यन्त्र का प्रयोग किया जाता है।

- आतपन से आशय सूर्य से निकलने वाली उर्जा या सूर्यातप से है, जिसे पृथिवी रोक लेती है। तापमान के वितरण को प्रभावित करने वाला कारक आतपन है।
- पृथिवी की सतह पर वायु द्वारा लगाये गए दबाव को **वायुदाब** कहते हैं। वायुदाब को मापने के लिए **वायुदाबमापी** यन्त्र का प्रयोग करते है। उच्च से निम्न दाब क्षेत्र की ओर गतिशील वायु को **पवन** कहते हैं।सामान्यत: तीन प्रकार की पवनें है- 1. स्थाई पवन 2. स्थानीय पवन 3. मौसमी पवन।
- **स्थाई** पवन को **पूर्वा या व्यापारिक पवन** भी कहते हैं। ये पवनें वर्ष भर उत्तरी गोलार्ध में उत्तर-पूर्वी तथा दक्षिणी गोलार्ध में दक्षिण-पूर्वी दिशा में बहती है।
- मौसम के अनुसार प्रवाहित होने वाली पवन को **मौसमी पवन** कहते हैं। ये पवन ग्रीष्मकाल में समुद्र से स्थल की ओर तथा शीतकाल में स्थल से समुद्र की ओर चलती है।
- निम्न वायुमण्डलीय दवाब के चारों ओर तेज गर्म हवा को **चक्रवात** कहते हैं। चक्रवात को उत्तरी गोलार्ध में हरीकेन या टाइफून कहते हैं।
- जल की बूंदें भारी होकर वायु में तैर नहीं पातीं तब वर्षा के रूप में भूमि पर गिरती हैं। वर्षा तीन प्रकार की होती है- संवहनीय वर्षा, पर्वतीय वर्षा एवं चक्रवाती वर्षा।
- पृथिवी का वह भाग जहाँ सभी प्रकार का जीवन विद्यमान है जैव मण्डल कहलाता है। जैव मण्डल में समस्त जन्तु व पादप जगत सम्मिलित हैं। इसका विस्तार स्थल, जल एवं वायु मण्डल तक होता है।
- मानव द्वारा कृत्रिम रूप से निर्मित पर्यावरण को मानव निर्मित पर्यावरण कहते हैं। इसके अन्तर्गत विद्युत एवं मशीनी उपकरण, भवन, पार्क एवं समस्त भौतिक वस्तुएं आती हैं।
- मानव द्वारा अपने भौतिक उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु प्रकृति के साथ व्यापक छेड़-छाड़ के कारण प्राकृतिक पर्यावरण का सन्तुलन बड़े स्तर प्रभावित होना **पर्यावरणीय समस्याएँ** या **प्रदूषण** कहलाती हैं।
- वैदिक वाङ्मय में पृथिवी को माता और आकाश को पिता, नदियों, वनस्पतियों एवं सम्पूर्ण प्रकृति को माता, देवी एवं देवरूप बताया गया है। इनका शान्त रूप हमें आनन्द प्रदान करता है।पर्यावरण का दूसरा प्रमुख घटक जल है। आचार्य सायण ने अपने भाष्य में जल के 16 नामों का उल्लेख किया है।
- जीवाणु शास्त्रियों के एक प्रयोग द्वारा यह सिद्ध हुआ है कि, नित्य अग्निहोत्र से 8 हजार घन फीट वायु प्रदूषण रहित होने के साथ 96% कीटाणु नष्ट हो जाते हैं।
- वैश्विक स्तर पर 1972 में संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यू.एन.ई.पी.) बना। 1992 में पर्यावरण और विकास विषय पर आयोजित संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन में कार्यक्रम-21 जारी किया गया।
- सन् 2000 में अर्थचार्टर कमीशन की त्रिदिवसीय बैठक के तीसरे दिन भारतीय प्रतिनिधियों ने अथर्ववेद के पृथिवी सूक्त की चर्चा की और स्पष्ट किया वेदों में पर्यावरण संरक्षण के सूत्र भरे पड़े हैं।

अध्याय -3

प्राकृतिक वनस्पतियाँ एवं जैव विविधता

- वे पौधे जो बिना मनुष्य की सहायता के उपजते हैं, उन्हें प्राकृतिक वनस्पति कहा जाता है। वे प्राकृतिक वनस्पतियाँ जिन पर लम्बे समय तक मानवीय प्रभाव नहीं पड़ता वे अक्षत वनस्पतियाँ कहलाती है।
- जलवायु की भिन्नता के कारण वनस्पतियों को तीन वर्गों में वर्गीकृत किया गया है-

  1. वन 2. घास स्थल 3. कटीली झाडियाँ।

- धरती का वह भाग जो सघन रूप से वृक्षों से घिरा हुआ है, वन (Forest) कहलाते हैं। वन एक नवीकरण योग्य संसाधन हैं।
- जलवायु की विविधता की दृष्टि से सामान्यत: वनों की श्रेणियाँ इस प्रकार है-

  1. उष्ण कटिबन्धीय सदाबहार वन 2. उष्ण कटिबन्धीय पर्णपाती वन
  3. शीतोष्ण सदाबहार वन 4. शीतोष्ण पर्णपाती वन
  5. भूमध्यसागरीय वन 6. शंकुधारी वन।

- मूलत: यह घास के मैदान वहाँ पाये जाते हैं, जहाँ जङ्गल की वृद्धि के लिए पर्याप्त और नियमित वर्षा नहीं होती है। प्राय: ये घास के मैदान जङ्गलों और रेगिस्तानों के बीच स्थित होते हैं।
- अंटार्कटिका महाद्वीप के अलावा दुनिया के हर महाद्वीप पर घास के मैदान दुनिया के 20 से 40 प्रतिशत भूमि पर पाये जाते हैं। घासस्थलों की मुख्यत: दो श्रेणीयाँ हैं-

  1. उष्ण कटिबन्धीय घास स्थल 2. शीतोष्ण घास स्थल।

- उष्ण कटिबन्धीय घास स्थल वाले वन भूमध्य रेखा के दोनों ओर विस्तृत है। इन घासस्थलों में वनस्पतियाँ तीन से चार मीटर की उँचाई वाली होती हैं। सामान्यत: उष्णकटिबन्धीय घास स्थलों में हाथी, जेब्रा, जिराफ, हिरण, तेन्दुआ आदि जानवर पाये जाते हैं।
- शीतोष्ण घास स्थल उत्तरी गोलार्द्ध मे कर्क रेखा से आर्कटिक वृत्त में 66.5° अक्षांश पर और दक्षिणी गोलार्ध मे मकर रेखा से अंटार्कटिक वृत्त के मध्य पाये जाते हैं। इन क्षेत्रों में मौसम ठण्डा रहता है और वर्षा सामान्य होती है। इन घास स्थलों में जङ्गली भैंसा, बाइसन एवं एंटीलोप नामक जीव पाये जाते हैं।
- जिन प्रदेशों में औसत वार्षिक वर्षा 50% से कम होती है वहां वनस्पतियों की दृष्टि से कँटीली झाडियाँ पाई जाती है। ये वन उष्णकटिबन्धीय मरू क्षेत्रों एवं महाद्वीपों के पश्चिमी किनारों पर पाया जाता है। इन क्षेत्रों में कैक्टस, कैर, खजूर, अकेशिया, बबूल जैसी कांटेदार वनस्पतियाँ पायी जाती हैं।

- ऋग्वेद में उल्लेख है कि- **वनस्पते वीड्वङ्गो हि भूया अस्मत्सखा प्रतरणः सुवीरः। गोभिः सन्नद्धो असि वीळयस्वास्थाता ते जयतु जेत्वानि।** (6.47.26) इस मंत्र में ऋषि ने वनस्पतियों से मित्रवत् व्यवहार की शिक्षा दी है। वृक्ष हमारे विचारों एवं भावनाओं के साथ जुडे रहते हैं।
- अथर्ववेद में स्पष्ट उल्लेख है कि- **अविर्वै नाम देवतर्तेनास्ते परीवृता। तस्या रूपणेमे वृक्षा हरिता हरितस्रजः॥** (10.8.31) अर्थात् अवितत्त्व (रक्षक तत्त्व) के कारण वृक्षों में हरियाली रहती है।
- यजुर्वेद में शिव को वन, औषधियों, वनस्पतियों, वृक्षों आदि का स्वामी कहा गया है- **वृक्षाणां पतये नमः। ओषधीनां पतये नमः॥** (16.17-19)
- किसी विशेष क्षेत्र में वनस्पति तथा वन्य प्राणियों में विविधता पायी जाती है, इसे ही **जैव विविधता** कहते हैं। जैव विविधता के तीन प्रमुख कारक हैं- 1. धरातल 2. जलवायु 3. पारिस्थितिकी तन्त्र।
- पृथिवी के ऊपरी भाग को धरातल (SURFACE) कहते हैं। धरातल के दो भाग हैं-

  1. स्थल भाग 2. जल भाग
- जलवायु विस्तृत भू-खण्डों पर लम्बे कालखण्ड के लिए वहां के वातावरण को दर्शाता है। जलवायु को प्रभावित करने वाले प्रमुख तत्त्व तापमान, सूर्य का प्रकाश एवं वर्षा हैं।
- किसी भी क्षेत्र की वनस्पतियाँ तथा प्राणी आपस में भौतिक पर्यावरण से अन्तर सम्बन्धित होकर जीवोम का निर्माण करते हैं, इसे ही **पारिस्थितिकी तन्त्र** कहते हैं।
- भारत में लगभग 47000 विभिन्न प्रजातियों की वनस्पतियाँ पाई जाती है। जैव विविधता की दृष्टि से भारत का विश्व में दसवाँ और एशिया में चौथे स्थान है।
- भारत में पुष्पों की लगभग 15000 प्रजातियाँ पाई जाती हैं, जो कि विश्व में कुल पुष्प की प्रजातियों का 6% है तथा लगभग 89000 प्रजातियों के जानवर तथा विभिन्न प्रकार की मछलियाँ नदियों, तालाबों तथा समुद्री जल में पाई जाती हैं।

अध्याय- 4

मरुस्थल में जीवन

- ऐसे शुष्क क्षेत्र जिनमें वर्षा का अभाव, उच्च या निम्न तापमान एवं विरल वनस्पतियां होती हैं, मरुस्थल कहलाते हैं। विश्व में मात्र 20% रेतीले मरुस्थल हैं। अण्टार्टिक विश्व का सबसे बड़ा हिम मरुस्थल तथा सबसे बड़ा गर्म मरुस्थल सहारा है।
- तापमान के आधार पर मरूस्थल को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है-

  1. शुष्क या गर्म मरुस्थल 2. ठण्डा मरुस्थल।
- शुष्क मरुस्थल में सामान्यत: 50 सेमी से कम वर्षा होती है। इन स्थानों पर रहने वाले जीव शुष्क जलवायु वाले होते हैं। सहारा, मोजावे, थार ऐसे ही मरुस्थल हैं।
- ठण्डे मरुस्थलों में हिमपात होने के कारण शीतकाल में अत्यधिक सर्दी होती है। ये उच्च समतल क्षेत्रों में पाये जाते हैं। अण्टार्कटिका, ग्रीनलैण्ड, लद्दाख और आर्कटिक आदि ठण्डे मरुस्थल हैं।
- सहारा मरुस्थल अफ्रीका महाद्वीप के उत्तरी हिस्से में अटलांटिक महासागर से लाल महासागर तक 56,000 किलोमीटर की लम्बाई में एवं सूडान के उत्तर तथा एटलस पर्वत के दक्षिण में 1,300 किमी. की चौड़ाई तक विस्तृत है। इसका क्षेत्रफल (8.54 लाख वर्ग कि.मी.) यूरोप महाद्वीप के बराबर एवं भारत के क्षेत्रफल के दोगुने से भी अधिक है।
- सहारा मरुस्थल के अन्तर्गत माली, मोरक्को, मौरतानिया, अल्जीरिया, ट्यूनिशिया, लीबिया, नाइजर, चाड, सूडान एवं मिस्त्र आदि देश आते हैं।
- सहारा एक मरुस्थलीय पठार है जिसकी औसत ऊंचाई 300 मीटर (कुछ स्थान 2500 मीटर से अधिक ऊँचे) हैं। इस उष्ण कटिबन्धीय मरुभूमि का इतिहास लगभग 30 लाख वर्ष पुराना है। यहाँ कुछ ज्वालामुखी पर्वत भी हैं, जिनमें अल्जीरिया का होगर तथा लीविया का टिवेस्टी पर्वत मुख्य हैं।
- सहारा मरुस्थल में दिन का तापमान 50 डिग्री सेल्सियस से ऊपर तथा रात का तापमान लगभग 0 डिग्री सेल्सियस होता है। सहारा के अल्जीरिया ईस्वी 1922 क्षेत्र में (त्रिपोली और लीबिया के मध्य) डिग्री सेल्सियस तापमान दर्ज किया गया था। 57.7 में सहारा मरुस्थल में कुछ ऐसे विशिष्ट क्षेत्र भी हैं, जहाँ मरूउद्यान एवं हरित द्वीप भी पाये जाते हैं।
- वर्तमान सहारा रेगिस्तान पूर्व के समय में पूर्णत: हरा-भरा मैदान था। परन्तु जलवायु परिवर्तन के कारण यह उष्ण एवं शुष्क क्षेत्र में परिवर्तित हो गया।

- विशाल सहारा रेगिस्तान की भौगोलिक विशेषताओं के आधार पर यहाँ विविध प्रकार की वनस्पतियाँ जैसे- कैक्टस, खजूर के वृक्ष एवं ऐकेशिया आदि पाई जाती हैं।
- सहारा मरुस्थल में ऊँट, लकड़बग्घा, सियार, लोमड़ी, बिच्छू, साँपों एवं छिपकलियों की विभिन्न प्रजातियाँ पाई जाती हैं।
- सहारा मरुस्थल के प्रमुख समुदायों में बेदुईन एवं तुआरेग हैं। चलवासी जनजातियाँ दूध, खाल एवं बाल प्राप्त करने के लिए बकरी, ऊँट, घोडे आदि पालते हैं।
- सहारा मरुस्थल में निरन्तर चलने वाली गर्म वायु एवं धूल भरी आँधियों से बचने के लिए लोग भारी वस्त्र पहनते हैं।
- सहारा के निवासी मरु-उद्यानों एवं मिश्र की नील घाटी में प्राय: निवास करते हैं। इस क्षेत्र में लोग खजूर के साथ-साथ चावल, गेहूं, जौ, सेम एवं कपास जैसी फसलें भी उत्पादित करते हैं।
- इस क्षेत्र में खनिज तेल की खोज के उपरान्त विकास तेजी से हुआ है। यहाँ प्राप्त प्रमुख खनिजों में लोहा, फास्फोरस, मैंगनीज एवं यूरेनियम हैं। आज यहाँ आधुनिक शैली के भवनों एवं विशाल राजमार्गों का निर्माण किया जा रहा है। यहाँ के मूलवासी शहरी जीवन की ओर निरन्तर अग्रसर हो रहे हैं।
- लद्दाख भारत का सबसे ठण्डा रेगिस्तान है। इसे खा-पा-चान (हिम-भूमि), चट्टानी धरती अथवा अनेक दर्रों वाली भूमि भी कहते हैं। यह उत्तर में काराकोरम पर्वत और दक्षिण में हिमालय पर्वत के बीच में स्थित है। लद्दाख का क्षेत्रफल 1,66,698 वर्ग किमी है।
- लद्दाख के अन्तर्गत पाक अधिकृत गिलगिट, बलूचिस्तान, चीन अधिकृत अक्साई चीन और शक्सगम घाटी का क्षेत्र भी शामिल है।
- लद्दाख उत्तर पश्चिमी हिमालय के पर्वतीय क्रम में आता है जहाँ का अधिकांश धरातल कृषि योग्य नहीं है। गाडविन आस्टिन (K-2, 8611 मीटर) और गाशारब्रूम (8068) सर्वाधिक ऊँचाई वाली चोटियाँ हैं। लद्दाख के उत्तर में चीन तथा पूर्व में तिब्बत की सीमाएं हैं। अत: भारत की सीमावर्ती स्थिति के कारण सामरिक दृष्टि से भी लद्दाख का बड़ा महत्त्व है।
- लद्दाख की जलवायु अत्यन्त शुष्क एवं शीतल है। वार्षिक वृष्टि का औसत 10 सेमी तथा वार्षिक औसत ताप 5^0 C है। यहाँ दिन का तापमान 0 डिग्री सेल्सियस तथा रात का तापमान- 30 से 40 डिग्री सेल्सियस तक होता है। सिन्धु नदी को यहाँ की जीवन रेखा कहा जाता है।
- केन्द्रशासित प्रदेश लद्दाख की राजधानी एवं प्रमुख नगर लेह है, जिसके उत्तर में काराकोरम पर्वत तथा दर्रा है। राजधानी लेह सड़क एवं वायुमार्ग द्वारा देश के मुख्य भागों से जुड़ी हुई है। राष्ट्रीय राजमार्ग 1 ए, लेह को कश्मीर घाटी से जोड़ता है।

- हिमालय पर्वत के प्रमुख दर्रे- 1. काराकोरम (लद्दाख) 2. रोहतांग (हिमाचल प्रदेश) 3. जोजीला (जम्मू-कश्मीर) 4. नाथूला (सिक्किम) 5. लिपुलेख (उत्तराखण्ड)।
- मनाली-लेह राष्ट्रीय मार्ग केवल जुलाई से सितम्बर माह के मध्य खुलता है, जो रोहतांग, बारालाचा, लुनगालाचा, टंगलंग ला से गुजरता है।
- यह क्षेत्र शुष्क होने के कारण वनस्पति विहीन है। यहाँ जानवरों के चरने के लिए कहीं-कहीं पर ही घास एवं छोटी-छोटी झाड़ियां मिलती हैं। घाटी में सरपत, विलो एवं पापुलर के वृक्ष देखे जा सकते हैं। ग्रीष्म ऋतु में सेव, खुबानी एवं अखरोट जैसे पेड़ पल्लवित होते हैं। क्रिकेट का सबसे अच्छा बल्ला बनाने की लकड़ी विलो पेड़ से मिलती है, जो लद्दाख में मिलता है।
- लद्दाख में पक्षियों की विभिन्न प्रजातियां पाई जाती हैं। यहाँ विशेषकर बकरी, भेड़, याक आदि दूध, मांस, फर प्राप्त करने के लिए पाले जाते हैं।
- लद्दाख के पूर्वी भाग में अधिकांश लोग बौद्ध हैं तथा पश्चिमी भाग में अधिकांश लोग मुसलमान हैं। हेमिस गोंपा बौद्धों का सबसे बड़ा धार्मिक स्थान है और अन्य धार्मिक स्थलों में थिकसे, शे एवं लामायुरू हैं। शीत ऋतु में अधिकांशत: लोग धार्मिक अनुष्ठानों एवं उत्सवों में व्यस्त रहते हैं।
- लद्दाख के निवासी ग्रीष्मकाल में आलू, मटर, सेम, शलजम एवं जौ की खेती करते हैं। यहाँ महिलाएँ घरेलू कार्यों के साथ कृषि एवं छोटे व्यवसाय करती हैं। पर्यटन यहाँ का मुख्य उद्योग है।
- लद्दाख में मिले शिलालेखों से पता चलता है की यहाँ सभ्यता और संस्कृति का विकास नव पाषाण काल से प्रारम्भ हुआ था। यहाँ के प्राचीन निवासियों मोन और दार्द लोगों का वर्णन हेरोडोटस, नोर्चुस, मेगस्थनीज, प्लिनी, टालमी आदि विद्वानों के ग्रन्थों में प्राप्त होता है।

अध्याय- 5

मानवीय पर्यावरण एवं अन्योन्य क्रियाएँ

- मानव द्वारा कृत्रिम रूप से निर्मित पर्यावरण को मानव निर्मित पर्यावरण कहते हैं। इसके अन्तर्गत विद्युत एवं मशीनी उपकरण, भवन, पार्क एवं समस्त भौतिक वस्तुएं आती हैं।
- मानव निर्मित पर्यावरण का प्रमुख अंग मानव अधिवास (बस्तियाँ) हैं। बस्ती से तात्पर्य ऐसे स्थान से है, जहाँ लोग अपने अधिवास बनाते हैं।
- जल की पर्याप्त मात्रा में उपलब्धता के कारण मानव बस्तियों का विकास नदियों के किनारे एवं दोआब क्षेत्रों में हुआ। क्योंकि इन क्षेत्रों की भूमि अधिक उपजाऊ थी इसलिए इन क्षेत्रों में कृषि, व्यापार-वाणिज्य और विनिर्माण के विकास के साथ-साथ मानव बस्तियाँ भी बढ़ती चली गईं।
- विश्व की अनेक मानव सभ्यताओं का विकास नदियों के किनारे हुआ है, उदाहरण के लिए सिन्धु घाटी, मेसोपोटामिया की सभ्यता आदि।
- मानव बस्तियाँ स्थायी और अस्थायी दोनों ही रूपों में होती हैं। आज भी घुमन्तु जातियाँ अस्थायी बस्तियाँ बसाती हैं। स्थायी बस्तियाँ दो प्रकार की होती हैं- 1. ग्रामीण बस्ती 2. नगरीय बस्ती।
- ग्रामीण बस्तियों का सम्बन्ध प्रत्यक्षत: भूमि से है। यहाँ रहने वाले लोग प्राय: प्राथमिक गतिविधियों- कृषि, पशुपालन, मत्स्यपालन, आखेट, वानिकी, दस्तकारी सम्बन्धी आदि कार्य करते हैं।
- ध्रुवों पर रहने वाले लोग बर्फ के घर बनाते हैं, जिन्हें इग्लू कहते हैं।
- मानव बस्तियों के विकास क्रम में नगरीय बस्तियों का विकास अपेक्षाकृत नया है। नगरीय बस्तियों में घर बहु-मंजिला और सघन होते हैं। नगरीय क्षेत्रों में लोग निर्माण, व्यापार एवं सेवा क्षेत्रों में कार्यरत होते हैं।
- परिवहन से तात्पर्य लोगों एवं वस्तुओं के आवागमन के साधनों से है। नवपाषाण काल में पहिए के आविष्कार से मानव जीवन में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए। हमारे देश में प्राचीन काल से ही सामान्यत: गधे, खच्चर, बैल, ऊँट एवं घोड़ा गाड़ी आदि का उपयोग परिवहन संसाधनों के रूप में किया जाता था, जो आज भी प्रचलन में है।
- परिवहन के तीन प्रमुख मार्ग हैं- 1. स्थल मार्ग 2. जलमार्ग 3. वायु मार्ग।
- भारतीय रेलवे नेटवर्क का विश्व में चौथा स्थान है। ट्रान्ससाइबेरियन रेलमार्ग विश्व में सबसे लम्बा रेलमार्ग है, जो रूस में सेंट पीटर्सबर्ग से ब्लादिवोस्टक तक जाता है।
- भारत में राष्ट्रीय मार्गों मे एक्सप्रेस-वे नवीनतम हैं। स्वर्ण चतुर्भुजीय महामार्ग दिल्ली, मुम्बई, कोलकाता और चेन्नई को जोड़ता है।

- सञ्चार से तात्पर्य किसी ज्ञान, भाव या विचारों, सूचनाओं एवं सन्देशों को दूसरों तक पहुँचाना है। आज सञ्चार के क्षेत्र में नए एवं तीव्र संसाधनों के विकास ने विश्व में सूचना क्रांति को जन्म दिया है।
- डाक, समाचार पत्रों, आकाशवाणी, दूरदर्शन, सचलदूरभाष (मोबाईल), ई-मेल एवं सोशल मीडिया के द्वारा हम बड़ी संख्या में एक साथ लोगों तक सूचना प्रसारित कर सकते हैं।
- महाभारत युद्ध का सञ्जय द्वारा महाराज धृतराष्ट्र किया गया वर्णन, वर्तमान समय के सीधा प्रसारण (Live Telecast) का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है।
- अन्योन्य वह क्रिया है जो दो वस्तुओं द्वारा एक साथ सम्पन्न होती है और परस्पर कारण के रूप में विवेचित करती हैं। इस रूप में मानव और पर्यावरण का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है।
- भूमध्य रेखा के दोनों ओर 10° से 10° अक्षांशों के बीच पाये जाने वाले स्थानों को भू-मध्य या विषुवत रेखीय प्रदेश कहते हैं।
- भू-मध्य रेखीय प्रदेश में दक्षिणी अमेरिका का उत्तरीभाग, अफ्रीका का मध्य भाग तथा दक्षिण पूर्वी एशिया के द्वीपों को शामिल किया गया है। इसमें मुख्यत: अमेजन बेसिन, कांगो बेसिन, गिनीतट, इण्डोनेशिया मलेशिया तथा सिंगापुर सम्मिलित हैं।
- अमेजन नदी पश्चिमी पर्वतों से निकल कर इस क्षेत्र से प्रवाहित होती हुई पूर्व में अन्धमहासागर में मिलती है। यह अपनी अनेक सहायक नदियों से मिलकर बेसिन (द्रोणि) का निर्माण करती है।
- मुख्य नदी अपनी सहायक नदियों के साथ जिस क्षेत्र के पानी को बहाकर ले जाती हैं, वह उसका बेसिन कहलाता है। अमेजन बेसिन विश्व का सबसे बड़ा बेसिन है।
- ब्रोमिलायड एक प्रकार का पादप होता है, जो अपनी पत्तियों में जल संचित रखता है। मेंढक जैसे जीव इनका उपयोग अंडा देने के लिए करते हैं।
- भूमध्य रेखीय प्रदेश (अमेजन बेसिन) वर्ष भर सूर्य की किरणें सीधी पड़ती हैं। यहाँ का तापमान हमेशा उच्च रहता है। यहाँ की जलवायु उष्ण एवं नम होती है। यहाँ का औसत तापमान 23° से 37° तक होता है। यहाँ प्रतिदिन दोपहर बाद वर्षा होती है और रात्रि में मौसम साफ हो जाता है। यहाँ 200 से.मी. तक औसत वार्षिक वर्षा होती है।
- उष्ण और नम जलवायु के कारण यहाँ सघन वन पाये जाते हैं। यहाँ भूमध्य रेखीय क्षेत्रों में सदा हरे-भरे रहने वाले चौड़ी पत्ती के वन पाये जाते हैं, जो सेल्वा कहलाते हैं।
- भूमध्य रेखीय प्रदेश (अमेजन बेसिन) में वनों को साफ करके खेती की जाती है, जिसे मिल्पा कृषि कहते हैं। यहाँ चावल, मक्का, गेहूँ, गन्ना, तम्बाकू, कहवा, चाय, कोको, केला, अन्नानास आदि की खेती की जाती है। अमेजन वेसिन में रबड़ की खेती बहुतायत से होती है।

- भूमध्य रेखीय प्रदेश (अमेजन बेसिन) के निवासियों का कद छोटा, रङ्ग काला, नाक चपटी, होठ मोटे होते हैं। ये वृक्षों पर फूँस की झोपड़ी बनाकर रहते हैं, जबकि कुछ लोग मलोका कहे जाने वाले बड़े अपार्टमेण्टों में रहते हैं।
- गङ्गा और ब्रह्मपुत्र बेसिन के जलवायु प्रदेशों का विस्तार 10° से 30° उत्तरी अक्षांशों में विस्तृत है।
- घाघरा, सोन, गण्डक , कोसी और गङ्गा जैसी नदियाँ एवं ब्रह्मपुत्र की सहायक नदियाँ इसमें अपवाहित होती हैं। इस बेसिन में गङ्गा एवं ब्रह्मपुत्र के मैदान, हिमालय के गिरिपाद एवं सुन्दर वन डेल्टा हैं।
- ब्रह्मपुत्र नदी को यरलङ्ग (चीन), साम्पो (तिब्बत), देहांग (अरूणचल प्रदेश), जमुना (बांग्लादेश), मेघना (गङ्गा-ब्रह्मपुत्र की संयुक्त धारा) के नाम से भी जाना जाता है।
- गङ्गा और ब्रह्मपुत्र बेसिन में मानसूनी जलवायु पायी जाती है। अत: गर्मी और सर्दी दोनों ही अधिक पड़ती हैं। यहाँ मानसून काल में मध्य जून से मध्य सितम्बर तक 200 से 250 से.मी. तक वर्षा होती है। ब्रह्मपुत्र के मैदानी क्षेत्रों में बाँस के झुरमुट पाये जाते हैं।
- गङ्गा और ब्रह्मपुत्र बेसिन के उपजाऊ भागों में चावल, जूट, चाय, कपास, गन्ना, तिलहन, तम्बाकू, मक्का, गेहूँ, आम, जामुन, लीची, केला, पपीता, अनार, कटहल आदि की खेती होती है।
- गङ्गा और ब्रह्मपुत्र बेसिन में हाथी, घोड़ा, शेर, चीता, हिरण, गाय, बैल, गैण्डा, ऊँट, बकरी, भेड़, सुअर, बैल, घड़ियाल, विभिन्न प्रकार की मछलियाँ आदि पाये जाते हैं। गंगा नदी में पाई जाने वाली डाल्फिन मछली को हमारे देश का राष्ट्रीय जलीय जीव माना गया है।
- 2014 में गङ्गा नदी के संरक्षण के लिए नमामि गंगे कार्यक्रम चलाया है। गङ्गा-ब्रह्मपुत्र बेसिन की महत्वपूर्ण विशेषता पर्यटन है।
- जन घनत्व से आशय एक वर्ग कि.मी. क्षेत्र निवास करने वाले लोगों की संख्या है। भारत में सबसे अधिक जन घनत्व बिहार (1102 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी.) और सबसे कम अरूणाचल प्रदेश (17 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी) है।
- सम्पूर्ण धरती के लगभग ¼ भाग पर घास के मैदान हैं। भौगोलिक दृष्टि से घास स्थलों की दो श्रेणियाँ हैं- 1. शीतोष्ण कटिबन्धीय घास के मैदान 2. उष्णकटिबन्धीय' घास के मैदान।
- उत्तरी अमेरीका के शीतोष्ण घास के मैदानों को 'प्रेअरी' कहते हैं। प्रेअरी घास स्थल के निवासियों को रेड इंडियन कहा जाता है। यहाँ स्थानीय पवन 'चिनुक' बहती है।यहाँ पर चक्रवात-प्रतिचक्रवात के कारण मौसम बदलता रहता है।
- जो अमेरीका के मूल निवासी हैं। प्रेअरी क्षेत्र में गेहूँ का सर्वाधिक उत्पादन होने के कारण इसे विश्व का अन्नागार कहा जाता है।

अध्याय- 6

7 वीं से 18 वीं सदी के मध्य हुए परिवर्तनों को समझना

- अरब भूगोलवेत्ता 'अल्-इदरीसी' ने 1154 ई. में विश्व का मानचित्र बनाया था। इस मानचित्र में दर्शाये गये भारतीय उप-महाद्वीप में भारत के दक्षिण भाग को उस स्थान पर दर्शाया गया है, जहाँ आज उत्तरी क्षेत्र है। 1720 ई. में फ्रान्सीसी मानचित्रकार 'ग्विलाम द लिस्ले' ने एटलस नूवो नाम से विश्व का मानचित्र का निर्माण किया था।
- सभी भाषाओं की जननी संस्कृत भाषा है। हजारों वर्षों के परिवर्तन के साथ भाषा-बोली, खान-पान, रख-रखाव, संस्कृति, यहाँ तक कि संस्कार और व्यवहार में भी परिवर्तन देखा जाता है। समय के साथ-साथ सूचनाओं के सन्दर्भ बदलते हैं तो भाषा और उनके अर्थ भी बदलते हैं।
- ऐतिहासिक अभिलेख कई तरह की भाषाओं में मिलते हैं और ये भाषाएं भी समय के साथ परिवर्तित हुई हैं, उदाहरण के लिए मध्ययुग की फारसी, आधुनिक फारसी भाषा से भिन्न है। यह भिन्नता सिर्फ़ व्याकरण और शब्द भण्डार में ही नहीं आई है अपितु समय के साथ शब्दों के अर्थों में भी परिवर्तन हुआ है।
- तेरहवीं सदी मे जब फ़ारसी के इतिहासकार 'मिन्हाज-ए-सिराज' ने हिन्दुस्तान शब्द का प्रयोग पंजाब, हरियाणा और गङ्गा-यमुना के मध्य स्थित क्षेत्रों से था। यह शब्द राजनीतिक अर्थ में उस समय दिल्ली के सुल्तान के अधिकार क्षेत्र में आने वाले भूभाग के लिए प्रयोग होता था।
- 16 वीं सदी के आरम्भ में बाबर ने हिन्दुस्तान शब्द का प्रयोग इस उप-महाद्वीप के भूगोल, पशु-पक्षियों और यहाँ के निवासियों की संस्कृति का वर्णन करने के लिए किया था।
- जहाँ भारत को एक भौगोलिक और सांस्कृतिक तत्व के रुप में पहचाना जा रहा था, वहाँ हिन्दुस्तान शब्द में वे सांस्कृतिक, राजनीतिक और राष्ट्रीय अर्थ नहीं जुड़े थे, जो हम आज जोड़ते हैं।
- मध्ययुग में किसी गाँव में आने वाला कोई भी अनजान व्यक्ति, जो उस समाज व संस्कृति का अंग न हो, विदेशी कहलाता था। ऐसे व्यक्ति को हिन्दी में परदेशी और फारसी में अजनवी कहा जाता था।
- 7 वीं से 18 वीं सदी तक के लगभग इन हजार वर्षों के इतिहास को जानने के लिए स्रोतों के रूप में कुछ पारम्परिक स्रोतों तथा इस काल के सिक्कों, शिलालेखों, स्थापत्यों तथा पाण्डुलिपियों (हस्त लिखित सामग्री) पर निर्भर हैं।
- प्राचीन काल से ही शासक, मठ, मन्दिर एवं समाज के धनी व्यक्ति पाण्डुलिपियों का संग्रह करते थे। लेखन कार्य हाथों से ही होते थे। प्रतिलिपिक, मूल पाण्डुलिपियों की प्रतिलिपि बनाते थे। प्रतिलिपिकरण के समय शब्दों एवं वाक्यों में भारी फेर बदल हुए हैं।

- 14 वीं सदी के जियाऊद्दीन बरनी ने अपने वृत्तान्त (1356 ईस्वी.) में लिखा और इसे 2 वर्ष बाद पुनः लिखा था। इन दोनों ही वृत्तान्तों में व्यापक अन्तर है। ऐसा ही पूर्व के कालों में सूचना प्रदान करने वाले मूल अभिलेखों के रूपान्तरण एवं प्रतिलिपि तैयार करते समय भी हुआ होगा।
- अभिलेखागार का अर्थ उस स्थान से है, जहाँ दस्तावेजों और पाण्डुलिपियों को संग्रहित किया जाता है।
- पर्यावास का अर्थ किसी क्षेत्र के पर्यावरण में वहाँ के लोगों की आर्थिक और सामाजिक जीवन शैल है।
- 7 वीं से 18 वीं सदी के कालखण्ड में निरन्तर परिवर्तित होती प्रौद्योगिकी के कारण अनेक प्रकार के आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन हुए थे। नये अवसरों की तलाश में लोग समूहों में सुदूर यात्रायें करने लगे थे। समाज में अनेक समुदायों जैसे- राजपूत, कवि और चारणों आदि का महत्व बढ़ा।
- मध्यकाल में प्राकृतिक पर्यावासों के रूप में बड़े पैमाने पर जङ्गलों को काट कर मैदान बनाना प्रारम्भ हुआ। जङ्गलों पर आश्रित वनवासियों को अपने प्राकृतिक अधिवास छोड़ने पड़े और वे कृषक बन गए।
- कृषकों के ये नये समूह क्षेत्रीय व्यवस्थाओं जैसे समाज, बाजार, मठों एवं मन्दिरों से प्रभावित होकर भारतीय समाज के अंग बन गये। परिणामत: किसानों के पूर्व एवं नये समूहों के बीच आर्थिक और सामाजिक अन्तर उभरे। शनै: शनै: मूल व्यवसाय के आधार पर लोग जातियों और उपजातियों में विभक्त हो गये।
- स्व-समूह के सदस्यों के व्यवहार को नियन्त्रित करने के लिए जाति समूह अपने नियम बनाते थे। जातियों को अपने क्षेत्रीय रीति-रिवाजों का पालन करना पड़ता था। राज्य की सबसे छोटी ईकाई गाँव होती थी, जिस पर मुखिया का शासन होता था।
- इस कालखण्ड में अनेक क्षेत्रों के भौगोलिक, भाषाई तथा सांस्कृतिक विशेषताएँ स्पष्ट हो चुकी थीं। ये क्षेत्र विशेष राजवंशों से जुड़ गए। इन राज्यों के मध्य आपसी टकराव होता रहता था। परिणामस्वरूप चोल, खिलजी, तुगलक और मुगल राजवंश इन क्षेत्रों में अपना विशाल साम्राज्य खड़ा किया।
- 18 वीं सदी में मुगल वंश का अन्त हुआ। क्षेत्रीय शक्तियां पुन: उभरने लगीं। परन्तु विशाल साम्राज्यों के लम्बे शासन के चलते क्षेत्रों की प्रकृति बदल गई थी। परन्तु अनेक छोटे-बड़े राज्यों का शासन कायम रहा और उनकी बहुत सी बातें भारत के अधिकतर भाग पर फैले इन क्षेत्रों को विरासत में प्राप्त थीं।
- इस परिवर्तनकारी काल में धार्मिक परम्पराओं में भी अनेक बड़े परिवर्तन हुए। यद्यपि धार्मिक दृष्टि से दैवत्त्व पर लोगों की आस्था व्यक्तिगत होती थी परन्तु सामान्यत: इसका स्वरूप सामूहिक होता था।
- भारतीय उपमहाद्वीप में इस्लाम धर्म सर्वप्रथम 7 वीं सदी में व्यापारियों, अप्रवासियों तथा इस्लामिक धार्मिक नेता और योद्धाओं द्वारा लाया गया था।

- आरम्भ में इस्लाम धर्म का विस्तार करने वाले को खलीफ़ा कहा जाता था। इस्लामिक न्याय सिद्धान्तों, धर्म सिद्धान्तों एवं रहस्यवादी विचारों की प्रचलित विभिन्न परम्पराओं में अनेक अन्तर रहे हैं।
- इतिहासकारों ने मध्यकाल के भारतीय इतिहास को तीन कालखण्डों में विभाजित किया है- हिन्दू, मुस्लिम और ब्रिटिश। इस विभाजन का आधारभूत विचार था कि ऐतिहासिक रूप में शासकों का धर्म परिवर्तित होता है, जबकि सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक दृष्टि से कोई विशेष बदलाव नहीं आता।
- मध्ययुगीन भारत में व्यापार एवं वाणिज्य का विकास तीव्र गति से हुआ था। व्यापारीगण सुरक्षादि कारणों से अपने राजा से पारपत्र (आज्ञा पत्र) लेकर समूहों में देश-विदेश में व्यापार करने जाते थे।
- व्यापारी अपने हितों की रक्षा के लिए गिल्ड (व्यापार संघ) बनाते थे। दक्षिण भारत में इन समूहों को मणिग्रामम् और नानादेशी कहा जाता था। अन्य व्यापारी समूहों में चेट्टियार, मारवाड़ी, ओसवाल, हिन्दू बनिया और मुस्लिम बोहरा आदि थे, जो वर्तमान में भी व्यापार-वाणिज्य के क्षेत्र में अग्रणी हैं।
- भारत के तटीय क्षेत्रों में पत्तनों के विकसित होने के साथ-साथ विदेशी व्यापारी भी बसने लगे थे। कालान्तर में ये क्षेत्र नगरों के रूप में विकसित हुए, उदाहरण के लिए सूरत और मसूलीपट्टनम्।
- मध्ययुगीन भारत में अनेक नगरों जैसे- दिल्ली, आगरा, फतेहपुर सीकरी, हम्पी और तंजावुर आदि के विकास का कारण राजाओं, महाराजाओं एवं शासकों की राजधानी होना था।
- तंजावुर नगर चोल शासकों की राजधानी था। यह नगर कावेरी नदी के तट पर बसा होने के कारण बहुत ही समृद्ध था। इस नगर में चोल राजा राजराज ने विश्वप्रसिद्ध भगवान शिव को समर्पित राजराजेश्वर मन्दिर का निर्माण करवाया था। इसके वास्तुकार का नाम कुंजरमलन राजराज पेरूथच्चन था।
- ग्राम निवासी अपनी पैदावार को बेचने के लिए इन स्थानों पर आते थे, जिन्हें मंडपिका (मंडी) कहा जाता था। इन स्थानों की गलियों में छोटे-छोटे बाजार होते थे, जिन्हें 'हाट' कहा जाता था।
- 17 वीं-18 वीं शताब्दी में यूरोपीय देशों की ईस्ट इंडिया कम्पनियाँ, जब भारत में व्यापार करने आईं तो उन्होंनें अपनी राजनीतिक, प्रशासनिक एवं व्यापारिक गतिविधियों को पूर्ण करने के लिए नये नगरों बम्बई, कलकत्ता और मद्रास जैसे शहरों का विकास किया।
- मुगलकाल में सूरत व्यापार का बहुत बड़ा केन्द्र था। यहाँ का सूती वस्त्र, सुनहरी, गोटा जरी का काम विश्व में प्रसिद्ध था। यहाँ काढियावाड़ी सेठों, साहुकारों और महाजनों की बड़ी-बड़ी कम्पनियाँ थी।
- मसूलीपट्टनम् (मछलीपट्टनम) नगर आन्ध्रप्रदेश के कृष्णा जिले में कृष्णा नदी के किनारे स्थित एक पत्तन नगर है। यह नगर मसालों और छींटदार वस्त्र के लिए प्रसिद्ध था। इस नगर में तेलुगु चेट्टीयार, फारस के सौदागरों एवं गोलकुण्डा के अमीर वर्गों का व्यापार अधिक था।

अध्याय-7

मध्यकालीन भारत- नए राजवंशों का उदय

- भारतीय उपमहाद्वीप में 7 वीं से 12 वीं शताब्दी के मध्य अनेक राजवंशों जैसे- चोल, राष्ट्रकूट, पाल तथा गुर्जर-प्रतिहार का शासन था।
- छठी शताब्दी के उपरान्त भारत के अनेक क्षेत्रों में बड़े जमींदारों, योद्धाओं और सरदारों का उदय हुआ। शासक इन्हें अपना सामान्त मानते थे।
- दन्तिदुर्ग वातापी के चालुक्यों के अधीन एक सामन्त था, जिसने राष्ट्रकूट राजवंश की स्थापना 736 ई. में चालुक्य शासक कीर्तिवर्मन द्वितीय को हरा कर की थी।
- दन्तिदुर्ग ने नासिक को अपनी राजधानी बनाया और हिरण्यगर्भ नामक एक अनुष्ठान भी किया था। ऐलोरा के प्रसिद्ध कैलाश मन्दिर का निर्माण राष्ट्रकूट शासक कृष्ण प्रथम (756-772 ई.) में कराया था।
- पाल वंश के संस्थापक गोपाल थे। पाल वंश का शासन 750 ई. से 1174 ई. तक सम्पूर्ण बङ्गाल एवं बिहार में रहा। प्रसिद्ध शासक धर्मपाल (775 ई. से 800 ई. तक) ने ही भागलपुर के पास विक्रमशिला विश्वविद्यालय की स्थापना की थी।
- चोल साम्राज्य की स्थापना विजयालय (850-880 ई.) ने 9 वीं शताब्दी में की थी। राजराजेश्वर (985-1014 ई.) चोल वंश के सबसे शक्तिशाली शासक हुए। राजराजेश्वर ने सर्वप्रथम पश्चिम के गङ्गों को हराकर उनका प्रदेश अपने साम्राज्य में मिला लिया था। राजेन्द्र प्रथम (1012-1044 ई.) भी चोल वंश का पराक्रमी राजा हुआ। चोल शासकों के शासन को तमिल साहित्य का स्वर्णकाल माना जाता है।
- इस काल में कंबन ने रामावतार, तोलामोलि ने सूलामणि तथा तिरुतक्कदेवर ने जीवक चिंतामणि' नामक प्रसिद्ध तमिल ग्रन्थों की रचना की थी।12 वीं शताब्दी में कल्हण द्वारा 'राजतरङ्गिणी' में कश्मीर के शासकों का इतिहास लिखा गया।
- गुर्जर-प्रतिहार साम्राज्य की स्थापना 725 ई. में नागभट्ट प्रथम ने की थी। गुर्जर-प्रतिहार वंश में वत्सराज, भोजराज प्रथम तथा महेन्द्रपाल प्रथम शक्तिशाली शासक हुए। गुर्जर-प्रतिहार वंश ने भारत के बड़े भू-भाग पर 8 वीं शताब्दी से 11 वीं शताब्दी तक शासन किया था।
- चोल वंश के अभिलेखों से पता चलता है कि, उस समय 400 से अधिक कर वसूले जाते थे।
- वर्तमान पंचायती शासन व्यवस्था चोल प्रशासन की देन है। चोल राज्य में गाँव से लेकर मंडलम तक स्वशासन की व्यवस्था थी। उस समय गाँवों में दो प्रकार के संगठन- उर (सामान्य लोगों का) और सभा (विशिष्ट लोगों का) कार्य करते थे।

- किसी व्यक्ति या वस्तु की प्रशंसा में लिखा गया ग्रन्थ प्रशस्ति कहलाता है। प्रशस्ति किसी वंश के बारे में भी बताती है। प्रशस्तियाँ विद्वान उन लोगों द्वारा लिखी जाती थी, जो प्रशासन (राज्य संचालन) में सहायता करते थे। ये ताम्रपत्रों पर लिखित अनुदान, भूमि प्राप्त करने वाले को दिये जाते थे।
- छठीं शताब्दी में राजनीतिक शक्ति का केन्द्र कन्नौज हो गया था। गुजरात के गुर्जर प्रतिहार, दक्कन के राष्ट्रकूट एवं बङ्गाल के पाल शासकों ने कन्नौज पर अधिकार करने के लिए लगभग 200 वर्षों तक संघर्ष किया, जिसमें गुर्जर-प्रतिहार राजाओं की विजय हुई थी। इतिहास में इसे 'त्रि-राष्ट्र संघर्ष' कहा गया है।
- महमूद गजनी (997 ई. से 1030 ई.) ने भारत पर 17 बार आक्रमण किया। सोमनाथ मन्दिर से वह अपार धन, सम्पदा लूटकर गजनी ले गया तथा मन्दिर को भी अत्यधिक क्षति पहुँचाई। महमूद गजनी के इतिहासकार अलबरूनी ने संस्कृत विद्वानों की सहायता से भारत उपमहाद्वीप का इतिहास 'किताब-अल-हिन्द' लिखा था।
- चौहान वंश के शासकों ने 7 वीं शताब्दी से लेकर 12 वीं शताब्दी तक राजस्थान एवं दिल्ली के आसपास के क्षेत्रों पर शासन किया। प्रारम्भ में चौहानों ने शाकम्भरी (सांभर) को अपनी राजधानी बनाया। राजा अजयराय ने 12 वीं शताब्दी के प्रारम्भ में अजयमेरू (अजमेर) को अपनी राजधानी बना लिया, इस कारण चौहानों को अजमेर का चौहान भी कहा जाता है।
- चौहान वंश का सबसे प्रसिद्ध शासक राय पिथौरा या पृथिवीराज तृतीय (1168-1192 ई.) था। पृथिवीराज चौहान तेरह वर्ष की आयु में 1178 ई. में अजमेर का शासक बना। उसकी वीरता से प्रभावित होकर उसके नाना अनंग पाल तोमर ने उसे दिल्ली राज्य का उत्तराधिकारी घोषित किया।
- 1191 ई. में पृथिवीराज चौहान ने मुहम्मद गोरी को तराइन के प्रथम युद्ध में परास्त किया। किन्तु एक वर्ष बाद ही मुहम्मद गोरी से तराइन के द्वितीय युद्ध (1192 ई.) में पृथिवीराज चौहान की हार के साथ भारत में हिन्दू राजशाही का अन्त हो गया।
- पृथिवीराज रासो के रचयिता चन्दरबरदाई हैं, जो पृथिवीराज चौहान के मित्र और राजकवि थे। पृथिवीराज रासो और प्रबंध चिन्तामणि के अनुसार पृथिवीराज चौहान ने मुहम्मद गौरी को इक्कीस बार युद्ध में हराया था।
- इतिहासकारों ने 1206 से 1526 ईस्वी तक के कालखण्ड को सल्तनत काल कहा है। दिल्ली पर शासन करने वाले मुस्लिम वंश- गुलाम वंश (1206 से 1290), खिलजी वंश (1290 से 1320), तुगलक वंश (1320 से 1414), सैयद वंश (1414 से 1451) तथा लोदी वंश (1451 से 1526) थे।
- कुतुबुद्दीन ऐबक ने अपने गुरु बख्तियार काकी की स्मृति में दिल्ली के मेहरौली में जहाँ गुप्तकालीन जङ्ग रहित लौह स्तम्भ स्थित है, वहीं 72.5 मीटर ऊँची **'कुतुबमीनार'** की नींव 1192 ई. में रखी इल्तुतमिश

ने पूर्ण किया था। कुतबुद्दीन ऐबक ने अजमेर में संस्कृत पाठशाला को तुडवाकर 'ढाई दिन का झोंपड़ा' नामक मस्जिद का निर्माण भी करवाया था।

- इस मीनार के निकट क़ातुल इस्लाम मस्जिद, जिसे सत्ताईस हिन्दू मन्दिरों को तोड़कर उनके अवशेषों से निर्मित की गई थी।
- इल्तुतमिश को गुलाम वंश का वास्तविक संस्थापक कहा जाता है। उसने 1229 ईस्वी में बगदाद के खलीफा से वैधानिक शासक की उपाधि ग्रहण की थी।
- इल्तुतमिश को 1233-34 ई. में नागदा के गुहिलोत और गुजरात के सोलंकी शासकों ने परास्त किया था। परन्तु उसने इसके बाद मालवा पर आक्रमण कर, भिलसा नगर के 300 मन्दिर और महाकाल मन्दिर उज्जैन को क्षति पहुँचाई।
- इल्तुतमिश को गुलामों का गुलाम कहा जाता है। क्योंकि वह, ऐबक का दामाद एवं गुलाम था। इल्तुतमिश अपने राज्य का विभाजन इक्ता (प्रान्त) नामक प्रशासनिक इकाईयों में किया था।
- इल्तुतमिश की मृत्यु के बाद चालीसा सरदारों ने इल्तुतमिश के पुत्र रूकऊद्दीन फ़िरोज की अयोग्यता के कारण इक्तेदारों (प्रान्तपतियों) ने इल्तुतमिश की पुत्री रजिया (1236-1240 ई.) को सुल्तान बनाया था।
- सुल्तान इल्तुतमिश का दास, गयासुद्दीन बलबन (1265-1290) अपनी योग्यता के बल पर इक्तादार (प्रान्तपति) बना था। बलवन 1265 ई. में सुल्तान बनने के पश्चात चालीसा सरदारों की शक्ति को समाप्त कर दिया था। वह अपने राजत्व सिद्धान्त के लिए भी इतिहास में जाना जाता है।
- 1290 ईस्वी में जलालुद्दीन खिलजी ने खिलजी वंश की स्थापना की थी। अलाउद्दीन खिलजी 1296 ई. में अपने चाचा और ससुर जलालुद्दीन खिलजी की हत्या करके दिल्ली का सुल्तान बना था।
- अलाउद्दीन खिलजी ने सर्वप्रथम दक्षिण भारत पर देवगिरि (1296 ई.) एवं द्वारसमुद्र (1310 ई.) पर अपने सेनापति मलिक काफूर के नेतृत्व में आक्रमण कर वहाँ की धन सम्पदा को लूटा था। 1303 ई. में चित्तौड़गढ़ युद्ध के समय वहाँ की रानी पद्मिनि ने 16000 क्षत्राणियों के साथ जौहर किया था।
- अलाउद्दीन खिलजी के प्रशासनिक सुधारों में- स्थायी सेना का गठन, सैनिकों को नकद वेतन, घोडों को दागने की प्रथा और बाजार नियन्त्रण व्यवस्था को लागू किया था।
- 1320 ईस्वी में खुसरो खाँ को पराजित करके गयासुद्दीन तुगलक दिल्ली का सुल्तान बना। 1324 ईस्वी में बङ्गाल विद्रोह को सुल्तान गयासुद्दीन ने दमन कर दिया था। दिल्ली के निकट लकडी के बने एक महल में आग लगने से गयासुद्दीन तुगलक की 1326 ई. में मृत्यु हो गई थी।
- मुहम्मद बिन तुगलक (1324-1351 ई.) को अपने कार्यों एवं योजनाओं के कारण सर्वाधिक विवादास्पद सुल्तान माना जाता है। उसके शासन काल में गङ्गा-यमुना के दोआब में कर वृद्धि, दिल्ली सल्तनत की

राजधानी दिल्ली के स्थान पर दौलताबाद (देवगिरी) में जन-बल समेत हस्तान्तरित करना, सांकेतिक मुद्रा का प्रचलन आदि योजनाओं के असफल होने के कारण इतिहाकारों ने उसे पागल बादशाह की उपाधि दी है।

- मुहम्मद तुगलक की मृत्यु के बाद फिरोजशाह तुगलक 1351 ईस्वी में सुल्तान बना था। उसने रोजगार दफ्तर, दीवान-ए-खैरात आदि विभागों की स्थापना की थी। फिरोजशाह तुगलक ने सर्वप्रथम इस्लाम के कानून और उलेमा वर्ग को शासन में प्रधानता दी थी।
- 1398 ई. में तैमूर के आक्रमण ने तुगलक वंश को खत्म कर दिया। तैमूर का सेनापति खिज्र खाँ, तैमूर की सहायता से 1414 ई. में दिल्ली की सत्ता प्राप्त कर सैयद वंश के शासन की स्थापना की थी।
- पंजाब का सूबेदार बहलोल लोदी अपनी योग्यता एवं सैन्य क्षमता के बल पर 1451 ई. में दिल्ली का सुल्तान बना था। लोदी वंश का आखिरी शासक इब्राहिम लोदी था। मेवाड़ के राणा सांगा ने खातोली के युद्ध (1517 ईस्वी.) में उसे परास्त कर उसके प्रभाव को सीमित कर दिया था।
- बाबर ने 21 अप्रैल 1526 को पानीपत के प्रथम युद्ध में लोदी वंश का अन्त कर मुगलवंश की सत्ता दिल्ली पर स्थापित कर दी थी। बाबर पश्चिम एशिया के दो आक्रान्ताओं, तैमूर एवं चगेज खाँ का वंशज था। मङ्गोल का निवासी होने के कारण वह मुगल कहलाया।
- बाबर के आक्रमण के समय मेवाड़ पर शक्तिशाली शासक राणा सांगा का शासन था। शीघ्र ही मुगलों की बढ़ती सीमा को रोकने के लिए राणा सांगा अपनी सेना लेकर 1527 ई. में खानवा के मैदान में पहुँचा। इस युद्ध में राणा सांगा की पराजय हुई और भारत में मुगल सत्ता को स्थायित्व प्राप्त हुआ।
- 1530 ई. में बाबर की मृत्यु के बाद उसकी वसीयत के आधार पर हुमायूँ दिल्ली का बादशाह बना। लेकिन उसके भाई इससे सन्तुष्ट नहीं थे और उत्तराधिकार का युद्ध के परिणामस्वरूप मुगल साम्राज्य चार भागों में बँट गया, जिससे हुमायूँ की ताकत कमजोर हो गई।
- बिहार के सूबेदार शेरशाह सूरी ने बङ्गाल को विजित कर सूरी वंश स्थापना की थी इसलिए हुमायूँ ने शेरशाह की सत्ता को कुचलने के लिए 1539 ईस्वी में चौसा एवं 1540 ईस्वी में कन्नौज युद्ध में पराजित हुमायूँ को भारत छोड़ना पड़ा था।
- 1540 ई. में शेरशाह ने उत्तर भारत में सूरी साम्राज्य की स्थापना की थी। अपने 5 वर्ष के अल्पकालिक शासन में उसने नई नगरीय, सैन्य व्यवस्था, रुपया नामक मुद्रा और डाक व्यवस्था स्थापित की थी। मई 1545 में कालिञ्जर दुर्ग के घेरे के समय उसकी मृत्यु हो गई।
- 22 जून 1555 ई. में सरहिन्द के युद्ध में हुमायूँ ने सिकन्दर शाह सूरी को परास्त कर एक बार पुन: दिल्ली पर कब्जा कर लिया। 1556 ईस्वी में पुस्तकालय की सीढियों से गिरकर हुमायूँ की मृत्यु हो गयी थी।

- जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर 13 वर्ष की अल्पायु में 1556 ई. में मुगल राज्य का शासक बना था। अकबर अपने शासन के आरम्भ में अपने संरक्षक बैरम खान, मुगल हरम और अपने घरेलू कर्मचारियों से प्रभावित था।
- दिल्ली के सम्राट हेमचन्द्र 'हेमू' और अकबर के मध्य 1556 ई. में पानीपत का द्वितीय युद्ध हुआ था। इस युद्ध में हेमू की पराजय हुई थी।
- सत्ता संभालने के बाद अकबर ने राज्य विस्तार की दृष्टि से 1562 ई. में मालवा, 1572 ई. में गुजरात, 1574 ई. में बङ्गाल, 1581 ई. में काबुल, 1586 ई. में कश्मीर, 1601 ई. में खानदेश को मुगल सत्ता के अधीन कर लिया था परन्तु वह अपने जीवनकाल में मेवाड़ के शासक महाराणा प्रताप को अपने अधीन न कर सका।
- अकबर ने अपने राज्य विस्तार के लिए 'सुलह-ए-कुल' की नीति अपनाई और वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किए। अकबर ने हिन्दू-मुस्लिम धर्म एवं अन्य पन्थों की अच्छी-अच्छी शिक्षाओं को मिलाकर 'दीन-ए-इलाही' की स्थापना की थी।
- अकबर ने प्रशासन के सुचारू सञ्चालन के लिए उसने नवरत्नों (मंत्रिमण्डल) का गठन किया था। बीरबल (प्रधानमंत्री), तानसेन (संगीत), अबुल-फजल(साहित्य) और टोडरमल (वित्त) आदि प्रमुख नवरत्न थे।
- अकबर ने फतेहपुर सीकरी को 1571 ई. में अपनी राजधानी बनाया था। गुजरात विजय के उपलक्ष्य में यहाँ पर उसने बुलन्द दरवाजे का (53.63 मी. ऊँचा) निर्माण करवाया था।
- जहाँगीर 1605 ई. में मुगल साम्राज्य का बादशाह बना था। वह चित्रकला का पारखी एवं न्याय प्रिय शासक था। उसने अपने पिता अकबर के सैन्य अभियानों को आगे बढ़ाने के साथ ही महाराणा प्रताप के पुत्र अमरसिंह से सन्धि की थी।
- जहाँगीर के शासन के अंतिम वर्षों में उसकी पत्नि नूरजहाँ ने शासन कार्यों को प्रभावित किया, जिसके कारण राजकुमार खुर्रम (शाहजहाँ) ने विद्रोह किया और जहाँगीर को जेल में डाल दिया था और कारागृह में ही 1627 ई. में उसकी मृत्यु हो गई थी।
- 1627 ई. में अपने पिता की मृत्यु के पश्चात शहजादा खुर्रम ने शाहजहाँ के नाम से मुगल सत्ता सँभाली थी। उसने अपने शासन काल में बुन्देलखण्ड विद्रोह (1627–1636) तथा खाने-जहाँ-लोदी के विद्रोह को (1628-1631) समाप्त किया था।
- शाहजहाँ के शासन काल में मुगल-सिक्ख (गुरु हरगोविन्द सिंह) संघर्ष में मुगलों की विजय मिली थी। दक्षिण में साम्राज्य विस्तार के लिए अहमदनगर, गोलकुण्डा और बीजापुर आदि राज्यों पर शाहजहाँ ने

अपना अधिकार स्थापित कर, इस्लामीकरण को बढ़ावा दिया था। मुगल इतिहासकारों ने शाहजहाँ के शासनकाल को स्थापत्य कला का स्वर्ण युग कहा जाता है।

- शाहजहाँ ने अपने शासन काल में स्थापत्य की दृष्टि से आगरा में ताजमहल (1632-1653 ई.) दिल्ली में लालकिला (1638-1648 ई.), जामा मस्जिद (1644-1656 ई.) आदि का निर्माण कराया था।
- 1657-58 ई. के मध्य शाहजहाँ के पुत्रों के बीच हुए उत्तराधिकार युद्ध में विजयी औरङ्गजेब ने अपने पिता शाहजहाँ को आगरा के कैदखाने में कैद कर दिया था, जहाँ 1658 ई. में उसकी मृत्यु हो गई थी।
- उत्तराधिकार के लिए हुए संघर्ष में अपने भाईयों की हत्या कर औरङ्गजेब ने 1658 ई. में मुगल सत्ता प्राप्त की थी। औरङ्गजेब एक क्रूर, धर्मान्ध, मुर्तिभञ्जक, साम्राज्यवादी, और कट्टर सुन्नी मुसलमान था।
- औरङ्गजेब 1663 ई. में उत्तर-पूर्व में उसने अहोमों को पराजित किया था परन्तु अहोमों ने 1680 ई. में पुनः विद्रोह कर दिया। मारवाड़ के राठौड़ राजपूतों ने मुगलों के खिलाफ विद्रोह किया। इन विद्रोहों का मुख्य कारण उनकी आंतरिक राजनीति और उत्तराधिकार के मामलों में मुगलों का हस्तक्षेप करना था।
- औरङ्गजेब के शासनकाल में दक्षिण में मराठा सरदार वीर शिवाजी का अभ्युदय हुआ शीघ्र ही उनका वर्चस्व बढ़ने लगा। शिवाजी के प्रभाव को रोकने के लिए औरङ्गजेब ने अभियान चलाए थे।
- औरङ्गजेब ने संधि के लिए शिवाजी को आगरा बुलाया और धोखे से कैद कर लिया परन्तु शिवाजी अपनी चातुर्यता से कैदखाने से निकल गये थे। 1674 ई. में शिवाजी ने अपने को स्वतन्त्र शासक घोषित कर मुगलों के विरूद्ध अनेक विजयी अभियान चलाए।
- औरङ्गजेब को उत्तर भारत में सिक्खों, जाटों और सतनामियों, उत्तर-पूर्व में अहोमों और दक्कन में मराठों के विद्रोहों का सामना करना पड़ा था। दक्षिण के विद्रोहों में उलझे औरङ्गजेब की 1707 ई. में मृत्यु हो गई थी।
- उत्तराधिकार के नियमों का अभाव, धार्मिक कट्टरता, दक्षिण नीति के कारण दिवालिया होना, हिन्दु राजाओं एवं सामन्तों से सम्बन्ध विच्छेद करना, अयोग्य उत्तराधिकारी आदि मुगलवंश के पतन का प्रमुख कारण थे। इतिहासकारों का मानना है कि मुगल साम्राज्य के पतन का मुख्य कारण औरङ्गजेब की धर्मान्धता और दक्षिण की नीति थी।

अध्याय- 8

मध्यकालीन भारतीय वास्तुकला

- मध्यकाल में राजमहल और किले सुरक्षादि कारणों से ऊँचे स्थलों, पहाडों की उपत्यकाओं, जल के मध्य, मैदानों आदि स्थानों पर होता था।
- मध्यकाल में सार्वजनिक उपयोग के लिए भवनों का निर्माण प्रशासकों, सेठ, साहुकारों एवं व्यापारियों सहित अन्य लोगों के द्वारा भी करवाया जाता था। मन्दिर, मस्जिद, कुएँ, बावड़ी, धर्मशालाएं, सराय तथा बाजार आदि सार्वजनिक भवन होते थे।
- मध्यकालीन हिन्दू राजाओं- चौहान, चन्देल, परमार, प्रतिहार, पाल, राष्ट्रकूट, चोल, चालुक्य एवं मुस्लिम शासकों आदि ने उत्तर से दक्षिण तक पूर्व से पश्चिम तक सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनैतिक तथा सैन्य महत्त्व के अनेक भवनों का निर्माण कराया था।
- मध्यकालीन स्थापत्य की दृष्टि से वास्तुकार दो खम्भों को सीधा खडा करके उनके आर-पार लम्बवत शहतीर रखकर खिड़कीयाँ, दरवाजे और छतों का निर्माण करते थे। वास्तुकला की इस शैली को अनुप्रस्थ टोडा निर्माण शैली कहते हैं।
- सल्तनत काल से मुगल काल के मध्य मन्दिरों, मस्जिदों, मकबरों तथा सीढीदार कुओं (बाबड़ियों) के निर्माण में अनुप्रस्थ टोडा निर्माण शैली का प्रयोग अधिक होता था।
- राजस्थान के बूंदी जिले में राजा अनिरुद्ध सिंह की रानी नाथावत जी ने 1699 ई. में जन उपयोग के लिए प्रसिद्ध रानीजी की बाबडी सहित अनेक बाबडियों का निर्माण करवाया था। है।
- बारहवीं शताब्दी में भारतीय वास्तुकला में इण्डो-ईरानी शैली विकसित हुई। इस शैली के तहत खिड़कियों व दरवाजों के ऊपर मेहराब आदि का निर्माण होने लगा था। भवनों की साज-सज्जा पर विशेष ध्यान दिया जाता था।
- मध्यकालीन भारत में हिन्दू शासकों द्वारा अपने इष्टदेव को समर्पित अनेक भव्य और विशाल मन्दिरों का निर्माण करवाया गया था, जो पूजास्थल होने के साथ-साथ सामरिक, आर्थिक, सामाजिक एवं धार्मिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण होते थे।
- मध्यकालीन मन्दिरों में मध्यप्रदेश के खजुराहो में चन्देल वंश के राजा धंगदेव द्वारा 999 ई. का कंदरिया महादेव मन्दिर अपनी अलंकृत शैली, उच्च वास्तु कौशल एवं परिष्कृत उत्कीर्णित मूर्तियों के कारण विश्वविख्यात है।

- तमिलनाडु राज्य के तञ्जावुर में (1003-1010 ई.) चोल शासक राजराज प्रथम द्वारा निर्मित राजराजेश्वर (वृहदेश्वर) मन्दिर अपनी विशालता एवं स्थापत्य कला के लिए प्रसिद्ध है। यूनेस्को ने इस मन्दिर को विश्व धरोहर सूची में शामिल किया है।
- महमूद गजनवी ने 1001 से 1030 ई. के मध्य तक भारत पर 17 बार आक्रमण कर भारत की अकूत सम्पदा लूटी। इसे मूर्ति भञ्जक भी कहा जाता है। 1026 ई. में सोमनाथ पर महमूद गजनवी ने आक्रमण किया था और वहाँ के मन्दिरों को जमकर लूटा था जो कि इतिहास में प्रसिद्ध है।
- मुस्लिम आक्रमणकारी अपने धर्म इस्लाम का प्रचार-प्रसार करने के लिए भी इन मन्दिरों, मठों व आश्रमों को नष्ट कर, उस स्थान पर मस्जिद का निर्माण करा देते थे। इतिहासकार ऐसा मानते हैं कि, मुगल शासक औरङ्गजेब रोजाना जबरदस्ती हजारों हिन्दुओं को मुसलमान बनाता था।
- मुगल बादशाह शाहजहाँ ने अपने सिंहासन (तख्त-ए-ताउस) के निर्माण में पितरादूरा शैली को अपनाया था। वृन्दावन के मन्दिरों की निर्माण शैली मुगल शैली से प्रभावित है।
- 18 वीं सदी में उत्कीर्णित संगमरमर या बलुआ पत्थर पर रंगीन पत्थरों द्वारा दाब देकर बनाए गए सुन्दर और अलंकृत प्रारूपों को पितरा-दुरा कहा जाता है।
- मध्यकालीन भारत में बीदर की शिल्पकला विश्वप्रसिद्ध थी। यहाँ पर तांबे तथा चांदी की जड़ाई का काम होता था, जिसे बीदरी शिल्पकला कहते हैं।
- चोलकालीन शासकों के समय मूर्तिकला का विकास चरम स्तर पर था। इस काल की कांस्य मूर्तियां लुप्त मोम तकनीक से बनाई जाती थीं।
- दक्षिण भारत में विजय नगर साम्राज्य की स्थापना हरिहर एवं बुक्का नामक दो यदुवंशी भाइयों ने 1336 ई. में की थी। विजय नगर साम्राज्य का सबसे प्रसिद्ध शासक कृष्ण देवराय (1509-1529 ई.) था। कृष्ण देवराय के दरबार में विश्व प्रसिद्ध वैदिक वाङ्मय के मूर्धन्य विद्वान सायण रहते थे।
- विजय नगर के शासकों ने प्रसिद्ध मालदेवी नदी पर एक विशाल बांध, पेयजल और सिंचाई के लिए अनेक नहरों तथा जलाशयों का निर्माण करवाया था।
- विजय नगर आने वाले प्रमुख विदेशी यात्री निकोलो द कोण्टी (इटली), अब्दुर्रज्जाक (ईरान) और डोमिंगो पायस, बारबोसा (पुर्तगाल) हैं।
- 15 वीं-16 वीं शताब्दी में हम्पी एक सुविकसित एवं समृद्ध नगर था। हम्पी नगर, कर्नाटक राज्य में कृष्णा तथा तुंगभद्रा नदियों की घाटी में स्थित है। हम्पी नगर का नामकरण स्थानीय मातृदेवी पम्पा के नाम पर किया गया था। हम्पी को युनस्को ने 1986 ई. में विश्व विरासत सूची में शामिल किया है।

अध्याय- 9

जनजातीय और यायावर समुदाय

- वैदिक संस्कृति में मनीषियों की उदार एवं उदात्त विचार चेतना जैसे- वसुधैव कुटुम्बकम्। (सम्पूर्ण वसुधा ही एक कुटुम्ब है।) एवं यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्। (जहाँ संसार ही एक घर है।) ने इस सम्पूर्ण प्रायद्वीप को एकता के सूत्र में पिरोये रखा है।
- अथर्ववेद के अनुसार, **यया दासान्यार्याणि वृत्रा करः** (20.36.10)। अर्थात् राजा इन्द्र ने ज्ञान से वञ्चित लोगों को ज्ञान प्रदान कर श्रेष्ठ मानव बनाया। इस मंत्र में संकेत मिलता है कि श्रेष्ठ और गुणीजनों ने शैने: शैने: मानव को सुसभ्य और संस्कारित बनाया था।
- वैदिक वाङ्मय की उपेक्षा के कारण अनेक जटिल राजनैतिक, धार्मिक एवं सामाजिक परिवर्तन हुए। लेकिन ये परिवर्तन सभी स्थानों पर समान नहीं थे। क्योंकि अलग-अलग प्रजातीय समाज अलग-अलग तरीकों से विकसित हुए थे।
- सामान्यत: ऐसे समाज जो प्रचलित ज्ञान तथा उपासना से वंचित रहकर, जङ्गलों, पहाडों एवं गुफाओं में निवास करते हैं, जनजातीय समाज कहलाते हैं। जनजातीय समाज के लोगों की परम्पराएँ और ज्ञान पद्धति सामान्य समाज से भिन्न होती है।
- जनजातीय समाज के लोग प्राय: छोटे-छोटे कुलों (कबीलों) में रहते हैं। इनके जीविकोपार्जन का मुख्य साधन कृषि व वनों से प्राप्त होने वाले उत्पाद हैं।
- जनजातीय समूह के लोग संयुक्त रूप से प्राचीन काल से ही भूमि और चारागाहों पर नियन्त्रण रखते थे। स्वयं के बनाये नियमों के आधार पर परिवारों के मध्य सम्पत्तियों का बँटवारा करते थे।
- भारत के अधिकांश राज्यों- पंजाब में खोखर, राजस्थान में भील व मीणा, जम्मू कश्मीर में गडरिया, मध्यप्रदेश में भील, लम्बादी, बंजारा, गोण्ड, कोल, मुण्डा आदि, बङ्गाल, झारखण्ड, बिहार व उडीसा में संथाल, कोल आदि, उत्तर-पूर्व में नागा, कर्नाटक, महाराष्ट्र में कोली, बेराद, गुजरात में भील, कोली, पटोलिया, डाफर आदि जनजातियां प्रमुख हैं।
- 1591 ई. में मुगल सेनापति राजा मानसिंह ने चेरों के आन्दोलन का दमन किया था। ब्रिटिश शासन के विरूद्ध 1828 ई.- 1878 ई. तक नागाओं के संघर्ष और 1855 ई. का संथाल विद्रोह हुए।
- यायावर लोग अपने जीविकोपार्जन के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान पर भ्रमणशील रहते थे इसलिए उन्हें घुम्मकड अथवा खानाबदोश भी कहते थे। प्राय: उनका जीवन, पशु उत्पादों पर निर्भर रहता था।

- यायावर जातियों में बंजारा जनजाति अग्रणी थी। बंजारों के पास बहुत अधिक मात्रा में सामान लाने व ले जाने के लिए हजारों की संख्या में बैल, हाथी, घोड़े, गधे, ऊँट आदि जानवर होते थे इसलिए इन्हें सौदागर भी कहा जाता था।
- भारत में नर्मदा नदी के दक्षिण भाग में स्थित विशाल वन प्रदेश को गोंडवाना कहते हैं। इस क्षेत्र में गोंड नामक जनजाति छोटे-छोटे कुलों में निवास करती थी। प्रत्येक कुल का अपना राजा या राय होता था।
- अकबरनामा में उल्लिखित है कि गढ कटंगा के गोंड राज्य में 70,000 गाँव थे। इन राज्यों की प्रशासनिक व्यवस्था केन्द्रीकृत होती थी।
- गढ़ कटंगा के गोंड राजा अमनदास ने संग्रामशाह की उपाधि धारण की थी तथा उसके पुत्र दलपत ने महोबा के चंदेल राजपूत राजा सालवाहन की पुत्री राजकुमारी दुर्गावती से विवाह किया था। दलपत की अल्पायु में मृत्यु के पश्चात् रानी दुर्गावती ने अपने पाँच साल के पुत्र वीर नारायण के नाम से सत्ता की बागडोर संभाली। रानी दुर्गावती मुगल सम्राट अकबर के समकालिक थी।
- 1565 ई. में मुगल सेनापति आसिफ़ खान के नेतृत्व में मुगल सेनाओं ने साम्राज्य विस्तार और आर्थिक संपदा प्राप्त करने के लिए गढ़ कटंगा पर आक्रमण किया था। रानी दुर्गावती ने मुगल सेना का बहादुरी से मुकाबला किया था, अन्ततः रानी की हार हुई और वीर गति को प्राप्त हुई।
- तेरहवीं सदी में अहोम जनजाति वर्तमान म्यांमार (बर्मा) से आकर ब्रह्मपुत्र घाटी क्षेत्र में बस गई थी। सोलहवीं सदी में अहोमों ने चुटीयों (1523 ई.) और कोच-हाजो (1581 ई.) को हराकर एक विशाल साम्राज्य की नींव रखी थी।
- 1662 ई. मुगल सेनापति मीर जुमला ने अहोम राज्य पर आक्रमण किया था। यद्यपि इस युद्ध में अहोमों की पराजय हुई थी। लेकिन मुगल शासक अधिक समय तक उन पर नियन्त्रण नहीं रख सके थे।
- अहोम लोग आग्नेय अस्त्रों के प्रयोग में दक्ष थे। अहोम राज्य बेगार पर आश्रित होने के कारण लोगों से जबरन कार्य करवाते थे। बेगार करने वालों को पाइक कहा जाता था।
- अहोम राजा शिवसिंह के समय (1714-44 ई.) ये हिन्दू धर्म में समाहित हो गए थे। अहोमों ने संस्कृत के अनेक ग्रन्थों का स्थानीय भाषा में अनुवाद किया था। बुरंजी नामक ऐतिहासिक ग्रन्थों को पहले अहोम और बाद में असमिया भाषा में लिखा गया था।
- इतिहास में सबसे प्रसिद्ध पशुपालक और शिकारी संग्राहक जनजाति मंगोलों की थी। वे मध्य एशिया के घास के मैदानों (स्टेपी) और उत्तर की ओर वन प्रदेशों में रहते थे। चंगेज खान ने 1206 ई. में मंगोल और तुर्कों में एकता स्थापित कर, विशाल साम्राज्य की स्थापना की थी। मुगलवंश का संस्थापक जलालुद्दीन मुहम्मद बाबर भी मंगोलियन था।

अध्याय-10

मध्यकालीन भक्ति आंदोलन और क्षेत्रीय संस्कृतियों का उदय

- श्रीमद्भगवद्गीता में उल्लेख है- **सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज। अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः॥** (18.66) अर्थात, सम्पूर्ण धर्मों का आश्रय छोड़कर तू केवल मेरी शरणमें आ जा। मैं तुझे सम्पूर्ण पापोंसे मुक्त कर दूँगा, चिन्ता मत कर। पुराणों में उल्लेख है कि भक्त भले ही किसी भी जाति-पाँति का हो वह सच्ची भक्ति से ईश्वर की कृपा प्राप्त कर सकता है।
- छठीं शताब्दी में भारत में धार्मिक आन्दोलन की शुरुआत हुई। भक्ति आन्दोलन का नेतृत्व दक्षिण भारत के बारह अलवार (वैष्णव) और तिरसठ नयनार (शैव) सन्तों ने किया था।
- आठवीं शताब्दी में अद्वैत दर्शन के प्रतिपादक शङ्कराचार्य का जन्म केरल राज्य में हुआ था। उनके अनुसार जीवात्मा और परमात्मा दोनों एक ही है। उन्होंने, संसार को मिथ्या बताया और इसे माया कहने के साथ ही ज्ञान के मार्ग को अपनाने का उपदेश दिया था।
- रामानुज ग्यारहवीं शताब्दी में तमिलनाडु में पैदा हुए थे। उन्होंने विशिष्टाद्वैत के सिद्धान्त को प्रतिपादित किया था। उनके अनुसार आत्मा-परमात्मा से जुडने के बाद भी अलग सत्ता बनाए रखती है।
- भक्ति आन्दोलन काल में दक्षिण में वैष्णव संतो द्वारा चार मतों की स्थापना की गई- 1. श्री सम्प्रदाय- रामानुजाचार्य (विशिष्टाद्वैत) 2. ब्रह्म सम्प्रदाय- मध्वाचार्य (द्वैत) 3. वैष्णव सम्प्रदाय- वल्लभाचार्य (शुद्धाद्वैत) 4. सनकादि सम्प्रदाय- निम्बार्काचार्य (द्वैताद्वैत)।
- भक्ति आन्दोलन को दक्षिण भारत से उत्तर भारत में प्रचार- प्रसार करने का श्रेय संत रामानन्द को है। इनका जन्म लगभग तेरह सौ ईस्वी में प्रयागराज में हुआ था। रामानन्द के प्रमुख शिष्य- रैदास (हरिजन), कबीर (जुलाहा), धन्ना (जाट), सेना (नाई), पीपा (राजपूत) आदि थे।
- सगुण सम्प्रदाय में तुलसीदास और नाभादास जैसे राम भक्त तथा निम्बार्क, बल्लभाचार्य, चैतन्य महाप्रभु, सूरदास और मीरा बाई जैसे कृष्ण भक्त हुए।
- निर्गुण सम्प्रदाय के प्रसिद्ध प्रतिनिधि कबीर थे। जिन्होंने जाति-पाँति का कड़ा विरोध किया था। इनके अतिरिक्त सन्त रविदास, मलूक दास आदि थे।
- महाराष्ट्र में तेरहवीं से सत्रहवीं शताब्दी के मध्य अनेक सन्त हुए, जिन्होंने भक्ति का प्रचार-प्रसार जनमानस में किया। ऐसे ही भक्त सन्त ज्ञानेश्वर, नामदेव, एकनाथ, तुकाराम, समर्थ रामदास, सखूबाई एवं चोखामल, सन्त नरसी मेहता आदि ने भगवान विष्णु के उपासक होने के साथ ही तत्कालीन समाज में फैली कुरीतियों का विरोध तथा मानवतावादी विचारों को बढ़ावा दिया था।

- इस्लाम के रहस्यवादी संतो को सूफी कहा गया है। वे, ईश्वर के प्रति प्रेम और भक्ति तथा सभी मनुष्यों के प्रति दयाभाव रखने पर बल देते थे। इनके निवास स्थान को **'खानकाह'** तथा शिष्यों को **मुरीद** कहा जाता था।
- दिल्ली के कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी, पञ्जाब के बाबा फरीद, दिल्ली के ख्वाजा निजामुद्दीन औलिया, शेख बुरहानुद्दीन और बन्दानवाज गिसुदराज आदि प्रमुख सुफी सन्त थे। अजमेर के ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती ने भारत में चिश्ती सिलसिले की शुरूआत की थी।
- सन्त कबीरदास (1440 ई.-1518 ई.) सुल्तान सिकन्दर लोदी की समकालीन थे। कबीर ने जाति प्रथा सुधार के साथ निर्गुण ईश्वरोपासना पर बल दिया। कबीर की वाणी का संग्रह **बीजक** नाम से प्रसिद्ध है जिसके तीन भाग हैं- साखी, सबद, रमैनी।
- गुरुनानक देव (1469 ई.-1539 ई.) ने समाज में एकेश्वरवाद, भाई-चारे का सन्देश और सामाजिक एकता पर बल दिया। उनकी शिक्षाओं के सङ्ग्रह को (गुरुग्रन्थ साहिब) के नाम से जाना जाता है। इन्हें सिख धर्म का प्रवर्तक कहा जाता है। सिक्खों का प्रसिद्ध स्वर्ण मन्दिर आज भी अमृतसर में विद्यमान है।
- मध्यकाल में चेर राज्य, की स्थापना नौंवी सदी में हुई थी। यह भारत के दक्षिण-पश्चिम भाग में स्थित वर्तमान केरल राज्य का हिस्सा है। यहाँ के अभिलेखों से ज्ञात होता है कि यहाँ की लिपि और भाषा मलयालम थी। चेर लोग, संस्कृत भाषा और परम्पराओं से अधिक प्रभावित थे।
- 14वीं सदी का मलयालम व्याकरण एवं काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ **लीलातिलकम** की रचना **मणिप्रवालम** शैली में हुई है। यह शैली मणी और प्रवाल के रूप में संस्कृत और क्षेत्रीय भाषा के सह-प्रयोग की ओर संकेत करती है।
- 12 वीं सदी में गंग वंशीय राजा अनन्तवर्मन ने जगन्नाथ पुरी में भगवान जगन्नाथ जी का मन्दिर बनवाया था। 1230 ई. में अनंग भीम द्वितीय ने भगवान जगन्नाथ को इस राज्य का स्वामी घोषित कर स्वयं को उनका प्रतिनिधि बताया था।
- वर्तमान राजस्थान को अंग्रेज लोग **राजपूताना** कहते थे। 8 वीं सदी में राजस्थान के अधिकांश क्षेत्रों में राजपूत राजाओं का शासन था। बप्पा रावल, पृथिवीराज चौहान, राणासांगा और राणाप्रताप, आदि शूरवीर राजा थे।
- प्राचीन काल में मन्दिरों में कथा व्यासों द्वारा कथक शैली में विविध कथानकों को हाव-भाव तथा संगीत द्वारा अलंकृत कर प्रस्तुत किया जाता था। 15 वीं-16 वीं सदी में इसी कथक शैली ने कथक नृत्य शैली का स्वरूप धारण कर लिया था।

- लखनऊ में नवाब वाजिद अली के शासन काल में कथक नृत्य शैली की विशेष उन्नति हुई थी। आज यह नृत्य शैली पंजाब, हरियाणा, जम्मू-कश्मीर, मध्यप्रदेश और बिहार आदि क्षेत्रों में प्रचलित है।
- भरतनाट्यम (तमिलनाडु), कथकली(केरल), ओडिसी (ओडिशा), कुचीपुड़ि (आन्ध्र प्रदेश), मणिपुरी (मणिपुर) आदि शास्त्रीय नृत्य हैं।
- प्राचीनतम लघु चित्र तालपत्रों या लकड़ी की पटरों पर चित्रित किए जाते थे। पश्चिम भारत में जैन ग्रन्थों को सचित्र बनाने के लिए भी इस कला का प्रयोग किया जाता था।
- मुगल काल में श्रेष्ठ चित्रकारों को संरक्षण प्राप्त था। ये चित्रकार प्राय: पाण्डुलिपियों को चित्रित करते थे। मेवाड़, जोधपुर, बूँदी और किशनगढ़ आदि चित्रकारी के केन्द्र के रूप में प्रसिद्ध थे।
- चित्रकार निहालसिंह द्वारा किशनगढ़ शैली में बनाया गया '**राधारानी**' (बणी-ठणी) का चित्र, उस काल का सर्वोत्तम चित्र है।
- 17 वीं सदी में **बसहोली** शैली का विकास हुआ था। भानुदत्त की **रसमंजरी** इसी शैली में चित्रित है। हिमालयी क्षेत्र में विकसित चित्रकला शैली को कांगड़ा शैली कहा गया।
- प्रारम्भिक बङ्गाली साहित्य को दो श्रेणियों में रखा जा सकता है- प्रथम श्रेणी **मङ्गल** और **भक्ति साहित्य** तथा दूसरी श्रेणी **नाथ साहित्यों** की है।
- बङ्गाली भाषा में रचित प्रमुख साहित्य मैनामती गोपीचन्द्र के गीत, धर्म ठाकुर की पूजा सम्बन्धित कहानियां, परी कथाएं, लोक कथाएँ तथा गाथा गीत हैं।
- नाथ साहित्य, नाथ सन्यासियों से सम्बन्धित है, जो भाँति-भाँति की यौगिक क्रियाएँ करते थे। धर्म ठाकुर ऐसे ही लोकप्रिय क्षेत्रीय नाथ देव हैं। इनकी पूजा प्रायः पत्थर या काष्ठ प्रतिमाओं के रुप में की जाती है।
- 15 वीं सदी में यहाँ अनेक मन्दिर बने जो स्थापत्य की दृष्टि से अति महत्वपूर्ण हैं। इन मन्दिरों की आकृति दो छतों वाली या चौचाला (चार छतों वाली) होती थी। बङ्गाल में विष्णुपुर के मन्दिर अपनी उत्कृष्ट सजावट के लिए प्रसिद्ध हैं।

अध्याय- 11

अठारहवीं शताब्दी के क्षेत्रीय राजनीतिक शक्तियाँ

- नादिरशाह ने दिल्ली पर 1739 ई. में आक्रमण कर सम्पूर्ण नगर में जमकर लूट मचाई। इसके पश्चात् अहमद शाह अब्दाली ने 1748 ई. से 1761 ई. के मध्य भारत पर पाँच बार आक्रमण करके उत्तर भारत में भारी लूटपाट की थी।
- 18 वीं सदी में मुगल साम्राज्य में दो अभिजात गुटों- ईरानियों और तूरानिओं का प्रभाव बढ़ गया था। परवर्ती मुगल बादशाह इन गुटों की सक्रिय प्रतिद्वन्दिता के चलते कठपुतली मात्र रह गये।
- निजाम-उल-मुल्क **आसफ जाह** (1724–1748) ने हैदराबाद राज्य की स्थापना की थी। यह मुगल बादशाह फर्रूखसीयर के दरबार का एक अत्यन्त शक्तिशाली सदस्य था।
- अवध राज्य की स्थापना बुरहान-उल-मुल्क सआदत खान ने 1731 ई. में की थी। मुगल साम्राज्य के विघटन के बाद अवध का उदय एक समृद्धशाली राज्य के रूप में हुआ था।
- मुर्शीद कुली खान को मुगलों ने बङ्गाल के सूबेदार के रूप में नियुक्त किया था। मुगल शासकों के कमजोर शासन के कारण बङ्गाल उनके नियन्त्रण से अलग हो गया। अलीवर्दी खान (1740-1756) ने बङ्गाल के शासन की नींव रखी थी।
- 18 वीं शताब्दी में मुगल सत्ता के कमजोर होने के पश्चात् राजपूत शासकों जैसे- जयपुर, जोधपुर और मालवा आदि ने अपने नियन्त्रण वाले क्षेत्र का विस्तार कर, स्वतन्त्र राज्य स्थापित कर लिए थे।
- 1708 ई. में सिक्खों के 10 वें गुरु गोविन्द सिंह की मृत्यु के पश्चात् बंदा बहादुर के नेतृत्व में खालसा ने मुगल सत्ता के खिलाफ विद्रोह किए थे।
- अठारहवीं शताब्दी में सिक्खों ने स्वयं को पहले जत्थों में और बाद में मिशलों में संगठित किया था। इन जत्थों और मिशलों की संयुक्त सेनाएँ 'दल खालसा' कहलाती थी। दल खालसा की वैसाखी एवं दीपावली पर्व पर अमृतसर में बैठक होती थी।
- सिक्खों ने राखी व्यवस्था की स्थापना की थी। इस व्यवस्था में किसानों से उनकी उपज का 20% कर लिया जाता था, बदले में उन्हें संरक्षण प्रदान किया जाता था।
- महाराजा रणजीत सिंह ने विभिन्न सिक्ख समूहों को एकत्र करके सिक्ख साम्राज्य की स्थापना कर 1799 ई. में लाहौर को अपनी राजधानी बनाया था। अठारहवीं शताब्दी के उत्तर काल में सिक्ख राज्य की सीमा सिन्धु नदी से यमुना नदी तक विस्तृत थी।
- महाराजा रणजीत सिंह ने अफगानिस्तान पर विजय प्राप्त कर, हरि सिंह नलवा को अफगानिस्तान का सूबेदार नियुक्त किया था। उसके शासन काल में अफगानिस्तान में शान्ति स्थापित रही थी।

- छत्रपति शिवाजी ने 1674 ई. में एक स्वतन्त्र मराठा राज्य की स्थापना की थी। 1720 ई. से 1761 ई. के मध्य मराठा साम्राज्य का विस्तार हुआ था। मराठों ने 1720 ई. में मालवा और गुजरात मुगलों से छीन लिया।
- 1730 ई. तक मराठों को दक्षिण भारत का स्वामित्त्व प्राप्त होने के साथ इन क्षेत्रों में चौथ (सुरक्षा कर) और सरदेशमुखी कर वसूलने का अधिकार भी मिल गया था।
- सिंधिया, गायकवाड़ और भोंसले जैसे मराठा सरदारों ने बड़ी सेनाएँ एकत्र कर ली थीं। मराठों के शासन काल में उज्जैन और इन्दौर महत्वपूर्ण वाणिज्यिक और सांस्कृतिक केन्द्रों के रूप में विकसित हुए थे।
- 1680 ई. शिवाजी की मृत्यु के पश्चात् मराठा शासन की बागडोर पेशवा (प्रधानमंत्री) के हाथ में चली गई थी। पेशवा के शासनकाल में मराठा राज्य की सीमाओं का विस्तार सर्वाधिक हुआ था। इनमें पेशवा बाजीराव सर्वाधिक शक्तिशाली थे।
- सदाशिव राव भाऊ के शासन काल में मराठा राज्य की सीमाओं का विस्तार दिल्ली तक हो गया था। 1761 ई. में अहमदशाह अब्दाली और पेशवा सदाशिवराव भाऊ के मध्य पानीपत का तृतीय युद्ध हुआ था, जिसमें मराठों की पराजय हुई और उत्तर भारत से मराठों का प्रभाव समाप्त हो गया था।
- जाट समुदाय मूलत: कृषक थे। 17 वीं-18 वीं शताब्दी में जाटों ने चूडामन के नेतृत्त्व में पश्चिमी दिल्ली के क्षेत्रों में नियंत्रण् स्थापित कर अपनी सत्ता को सुदृढ कर लिया था। इस काल में उनके प्रभुत्व क्षेत्र वाले पानीपत तथा बल्लभगढ़ जैसे नगर महत्वपूर्ण व्यापारिक केन्द्र बन गये थे।
- जाटों ने 1680 के दशक में दिल्ली और आगरा के मध्य के क्षेत्रों पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया था। महाराजा सूरजमल जाट वंश के सर्वाधिक शक्तिशाली शासक थे। उनके शासन काल में भरतपुर शक्तिशाली राज्य के रूप में उभरा था।
- 1739 ई. में जब नादिर शाह ने दिल्ली पर आक्रमण किया था तो उस समय दिल्ली के कई अमीरों ने भरतपुर में शरण ली थी। भरतपुर के किले को मुगल व अंग्रेज कभी नहीं जीत पाये थे इसलिए इसे लोहागढ़ का किला कहते हैं।
- डीग के जल-महल अपने स्थापत्य के कारण प्रसिद्ध हैं। इनके निर्माण में आमेर व आगरा शैली को अपनाया गया है।

अध्याय- 12

स्वास्थ्य और सरकार

- स्वास्थ्य शब्द का मूल अर्थ है, अपने में सुन्दर तरीके से स्थिर होना, अर्थात् योगमय जीवन जीना। शारीरिक रूप से स्वास्थ्य शब्द का अर्थ है-तन और मन को विविध चिन्ताओं, बीमारियों और चोटों आदि को मुक्त रखना है। तनाव, चिन्ता, भय से मुक्त और प्रसन्न रहना, स्वस्थ जीवन का लक्षण है।
- श्रीमद्भगवद्गीता में श्रीकृष्ण कहते हैं कि- **युक्ताहार विहारस्य युक्त चेष्टस्य कर्मसु। युक्त स्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा॥** (6.17) अर्थात् स्वस्थ जीवन के लिए आहार-विहार एवं व्यवहार सब कुछ सर्वोत्तम होना चाहिए।
- **आयु: सत्त्व बलारोग्य सुखप्रीति विवर्धना:। रस्या: स्निग्धा: स्थिराहृद्या आहरा: सात्विक प्रिया:॥** (17.8) अर्थात् आयु, सत्व, बल, आरोग्य, सुख एवं परस्पर प्रेम, भाईचारा बढाने हेतु हमें सात्विक और रुचिकर भोजन ग्रहण करना चाहिए।
- हमारे देश में स्वास्थ्य सेवाओं का विभाजन दो भागों में किया जा सकता है- 1. सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाएँ 2. निजी स्वास्थ्य सेवाएँ।
- सरकार द्वारा लोगों को निःशुल्क या सस्ती दर पर प्रदान की जाने वाली स्वास्थ्य सेवाओं को **सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवा** कहते हैं। हमारे संविधान में स्वास्थ्य सेवाएँ राज्य सूची का विषय हैं।
- ग्रामीण क्षेत्रों में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र (Primary Health Center) होते हैं। इन केन्द्रों में न्यूनतम एक डाक्टर, नर्स और ग्राम स्वास्थ्य सेवक रहते हैं। इन केन्द्रों में सामान्य श्रेणी की बीमारियों का उपचार किया जाता है। इनके अधीन प्राथमिक उपस्वास्थ्य केन्द्र भी होते हैं।
- ब्लाक स्तर पर सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र (Community Health Center) होते हैं। इन चिकित्सालयों में प्राय: एक से अधिक विशेषज्ञ चिकित्सक होते हैं। यहाँ पर अतिरङ्ग रोगी विभाग (OPD) के साथ प्रसव एवं सामान्य शल्य चिकित्सा की सुविधाएँ होती हैं।
- जिला स्तर पर जिला चिकित्सालयों होते हैं। इन चिकित्सालय में प्राय: सभी बीमारियों से सम्बन्धित डाक्टर व विशेषज्ञ होते हैं। ये सभी स्वास्थ्य केन्द्रों की देखरेख व निरीक्षण आदि के कार्य करते हैं और उच्च स्तर पर लोगों को स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करते हैं।
- राज्य और केन्द्र सरकारों ने गम्भीर और जटिल बीमारियों के उपचार, मेडिकल प्रशिक्षण, नये विषयों के शोधों-अनुसंधानों तथा स्वास्थ्य सेवाओं के उचित क्रियान्वयन के लिए, चिकित्सा महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों एवं अखिल भारतीय आर्युविज्ञान संस्थानों की स्थापना की है।

- अखिल भारतीय आर्युविज्ञान संस्थान भारत के सार्वजनिक क्षेत्र का आयुर्विज्ञान महाविद्यालयों का समूह है। 1956 ई. के एक अधिनियम द्वारा एक स्वायत्त संस्थान के रूप में इसका सृजन किया गया था।
- देश में स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर बनाने के लिये 2014 ई. में भारत सरकार ने भारत के विभिन्न भागों में 14 नये एम्स के निर्माण योजना बनाई है। इसी योजना के अन्तर्गत 2022 ई. तक प्रत्येक राज्य में एक एम्स खोलने का निर्णय भारत सरकार ने किया है।
- चिकित्सकों द्वारा अपने आवास या निजी चिकित्सालयों में लोगों से उचित फीस लेकर उनका उपचार करना निजी स्वास्थ्य सेवाएँ कहलाता है। निजी स्वास्थ्य सेवाओं पर परोक्ष रूप से सरकारी नियन्त्रण नहीं होता है।
- निजी स्वास्थ्य सेवाओं को दो भागों में विभाजित किया जाता है- पंजीकृत चिकित्सा व्यवसायी (आर. एम. पी.) और व्यापारिक तथा स्वंयसेवी संगठनों और ट्रस्टों द्वारा सञ्चालित चिकित्सालय।
- वर्तमान भारत में लगभग प्रतिवर्ष 30,000 से भी अधिक लोग चिकित्सकीय योग्यता प्राप्त करते हैं। विश्व में सर्वाधिक चिकित्सा महाविद्यालय एवं चिकित्सक भारत में हैं।
- भारत में स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता अच्छी एवं सस्ती है। इस कारण विदेशों से बडी संख्या में उपचार कराने के लिए लोग भारत आते हैं, जो चिकित्सा पर्यटक कहलाते हैं।
- हैजा, पेट के कीड़े, और हैपेटाइटिस इत्यादि रोगों की उत्पत्ति दूषित जल के सेवन करने से होती है, अतः इन्हें सञ्चरणीय रोग कहते हैं।
- कोराना महामारी से बचाव के लिए कोविडशील्ड और को-वैक्सीन नामक टीकों का आविष्कार भारत में किया गया है। हमारे देश में केन्द्र सरकार द्वारा सभी नागरिकों को नि:शुल्क टीके लगवाये गये हैं तथा आवश्यक होने पर बूस्टर डोज लगवाये जा रहे हैं।
- ओ.पी.डी.- यह आउट पेशेंन्ट डिपार्टमेन्ट या बाह्य रोगी विभाग का संक्षिप्त रूप है। जिसमें रोगों का प्राथमिक उपचार होता है। अस्पताल में किसी विशेष वार्ड में भर्ती होने से पहले रोगी ओ.पी.डी. में जाते है।
- जेनेरिक नाम- दवाइयों के रासायनिक नाम दवाइयों में प्रयुक्त सामाग्रियों की पहचान करने में मदद करते हैं, जैसे- दर्द और बुखार में दी जाने वाली दवा पैरासीटामॉल को दवा कम्पनियां उसी नाम से बेचती हैं तो ये जेनेरिक दवा कही जाती हैं। जेनेरिक दवाएँ विश्वस्तर पर मान्यता प्राप्त हैं।

अध्याय–13

राज्य शासन की कार्य प्रणाली

- शासन कार्य प्रणाली की दृष्टि से भारतीय संघ को केन्द्र और उसकी ईकाईयों राज्य के रूप में विभाजित किया गया है। इनके मध्य, शक्ति एवं कार्यों का विभाजन संविधान की सातवीं अनुसूची के अन्तर्गत अनुच्छेद-246 में संघसूची, राज्यसूची एवं समवर्तीसूची के माध्यम से किया गया है।
- संघ सूची में विदेश, रक्षा, रेल आदि सहित वर्तमान में 100 विषय हैं, जिन पर कानून बनाने का कार्य केन्द्र सरकार करती है।
- राज्य सूची के विषयों पर राज्य सरकारें कानून बनाती हैं। इस सूची में पुलिस, स्थानीय शासन, जेल, कृषि, स्वास्थ्य, शिक्षा आदि सहित 61 विषय हैं।
- समवर्ती सूची में वर्तमान में वन, विद्युत, शिक्षा आदि सहित 52 विषय हैं। इन विषयों पर केन्द्र एवं राज्य सरकार दोनों ही कानून बना सकती हैं। यदि दोनों सरकारें किसी एक ही विषय पर कानून बनाती हैं तो केन्द्र सरकार का कानून ही मान्य होगा।
- संविधान द्वारा राज्यों में शासन के सुचारू सञ्चालन के लिए राज्य शासन व्यवस्था के तीन अङ्ग है- राज्य विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका।
- राज्य विधायिका से आशय राज्यों में राजनैतिक व्यवस्था के उस संगठन से है, जिसे कानून व जन-नीतियां बनाने, बदलने एवं हटाने का अधिकार होता है। राज्यों में विधायिका का निर्माण राज्यपाल, विधायिका के निर्वाचित सदस्य, मुख्यमन्त्री और मन्त्रिमण्डल से मिलकर होती है।
- संविधान द्वारा राज्य विधायिका में दो सदन- विधानसभा (निम्नसदन) और विधान परिषद (उच्चसदन) का विधान किया गया है। वर्तमान में राज्य शासन व्यवस्था में 6 राज्यों-उत्तरप्रदेश, बिहार, महाराष्ट्र, कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश और तेलंगाना में द्विसदनात्मक व्यवस्था की स्थापना की गई है।
- राज्य का संवैधानिक प्रधान राज्यपाल होता है। उसकी नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा संविधान के अनुच्छेद 155 के अनुसार केन्द्र सरकार की सिफारिश पर पाँच वर्षों के लिए की जाती है।
- राज्यपाल विधानसभा में बहुमत दल के नेता को मुख्यमन्त्री की नियुक्त और मुख्यमन्त्री की सलाह से अन्य मंत्रियों की नियुक्ति करता है।
- विधानसभा से पारित विधेयक राज्यपाल के हस्ताक्षर के बाद ही कानून बनता है। राज्यपाल ही राज्य विधानसभा का सत्र बुलाता है और समाप्ति की घोषणा करता है।
- यदि राज्य सरकार संविधान के अनुसार कार्य नहीं कर रही है तो वह अपनी रिपोर्ट केन्द्र सरकार को भेजता है।

राज्यपाल बनने के लिए योग्यताएँ- 1. वह भारत का नागरिक हो। 2. वह 35 वर्ष की आयु पूर्ण कर चुका हो। 3. वह किसी भी राज्य विधानमण्डल व संसद का सदस्य न हो। 4. वह विधानसभा सदस्य चुने जाने की योग्यता रखता हो।

- प्रत्येक राज्य को कई विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों में विभाजित किया गया है। प्रत्येक राज्य में विधानसभा क्षेत्रों की संख्या उस राज्य की जनसंख्या के अनुसार निर्धारित की गई है। प्रत्येक विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र की जनता प्रत्यक्ष निर्वाचन द्वारा अपने एक प्रतिनिधि (विधायक) का चयन करती है।
- विधान सभा की कार्यवाही के सुचारु संचालन के लिए निर्वाचित सदस्यों में से ही विधानसभा अध्यक्ष का चुनाव किया जाता है। विधानसभा अध्यक्ष सदन में अनुशासन बनाये रखने के साथ विधानसभा की कार्यवाही का सञ्चालन करता है।
- विधानसभा के सदस्य को विधायक कहा जाता है। विधायक को आम भाषा में एम.एल.ए. (मेम्बर ऑफ लेजिस्लेटिव असेम्बली) कहा जाता है।

  विधायक बनने के लिए आवश्यक योग्यताएं हैं- 1. वह भारत का नागरिक हो। 2.उसका नाम मतदाता सूची में हो। 3. वह 25 वर्ष की आयु पूर्ण कर चुका हो। 4. वह पागल या दिवालिया न हो। 5. वह किसी सरकारी लाभ के पद पर न हो। 6. वह न्यायालय द्वारा 2 वर्ष से अधिक सजा प्राप्त न हो।
- मुख्यमन्त्री राज्य का राजनैतिक प्रमुख होता है। मुख्यमन्त्री की नियुक्ति राज्यपाल द्वारा 5 वर्ष के लिए की जाती है। परन्तु समय से पूर्व वह अपना बहुमत खो दे तो उसकी नियुक्ति समय से पूर्व भी समाप्त हो जाती है। वह विधानसभा में विधायक दल का नेता होता है।
- मुख्यमन्त्री की सलाह पर राज्यपाल अन्य मन्त्रियों की नियुक्ति करता है। वह मन्त्रिपरिषद की बैठकों की अध्यक्षता करता है। मुख्यमन्त्री राज्य कार्यपालिका का वास्तविक प्रधान होता है। मन्त्रिपरिषद, मुख्यमन्त्री के प्रति जबाबदेह होती है।
- विधान परिषद सदस्यों को एम.एल.सी. (Member of Legislative Council) कहा जाता है। इसके सदस्यों का चुनाव अप्रत्यक्ष रीति से होता है। कुछ सदस्य राज्यपाल द्वारा मनोनीत किये जाते हैं। इसका सदस्य बनने की न्यूनतम उम्र 30 वर्ष है। इसके सदस्यों का निर्वाचन छ: वर्ष के लिए होता है।
- धनविधेयक (अनुच्छेद 110 के अनुसार किसी कर का अधिरोपण, उत्सादन, परिहार, परिवर्तन या विनिमय करता हो) केवल विधानसभा में ही प्रस्तुत किये जाते हैं। विधानसभा को वित्तीय मामलों में पूर्ण नियन्त्रण प्राप्त है।
- विधानसभा की अन्य शक्तियों में राष्ट्रपति एवं उपराष्ट्रपति के चुनाव मे इसके सदस्य भाग लेते हैं। विधानसभा का कार्यकाल 5 वर्षों का होता है।

अध्याय- 14

सञ्चार माध्यम और विपणि: (बाजार) की समझ

- लोगों को सूचनाओं या सन्देशों का आदान-प्रदान करने वाले साधनों को सञ्चार माध्यम कहते हैं। टेलीविजन, रेडियो, समाचार-पत्र, सोशल मीडिया आदि सञ्चार माध्यमों के आधुनिक रूप हैं।
- भारत में मोबाईल सेवा का प्रारम्भ 21 जुलाई 1995 ई. में हुआ था। पहली बार पश्चिमी बङ्गाल के तत्कालीन मुख्यमंत्री ज्योति बसु ने सञ्चार मंत्री सुखराम से मोबाईल पर बात की थी।
- सेंसरशिप से आशय सरकार की उस शक्ति से है, जिसके द्वारा सरकार कुछ विवरणों को प्रकाशित या प्रदर्शित करने पर रोक लगा सकती है।
- देश में आपातकाल लागू होने पर प्रेस की स्वतन्त्रता को प्रतिबन्धित करने का सम्पूर्ण अधिकार सरकार के पास होता है। 1975 ई. में इन्दिरा गांधी सरकार ने प्रेस की स्वतन्त्रता पर प्रतिबन्ध लगाया था।
- किसी उत्पाद और सेवा को बेचने अथवा प्रवर्तित करने के उद्देश्य से किया जाने वाला जन सञ्चार, विज्ञापन (Advertise) कहलाता है।
- विज्ञापन, विक्रयकला का एक नियंत्रित जन सञ्चार माध्यम है जिसके द्वारा उपभोक्ता को दृश्य एवं श्रव्य सूचना इस उद्देश्य से प्रदान की जाती है कि वह विज्ञापनकर्ता की इच्छा, विचार और सहमति से कार्य अथवा व्यवहार करने लगे।
- वाणिज्यिक विज्ञापनदाता अक्सर उपभोक्ताओं के मन में कुछ गुणों के साथ एक उत्पाद का नाम या छवि छोड़ जाते हैं, जिसे ब्रान्डिंग कहते हैं। यह, वस्तु या सेवा की बिक्री बढ़ाने में प्रमुख भूमिका निभाता है।
- विज्ञापन मुख्य रूप से तीन प्रकार के होते हैं- 1. वाणिज्यिक 2. सामाजिक 3. सरकारी।
- ऐसे विज्ञापन जिनसे सामाजिक सन्देश प्राप्त होते हैं, सामाजिक विज्ञापन कहलाते हैं, उदाहरण के लिए सुरक्षित रेलवे क्रासिंग को पार करने से सम्बन्धित विज्ञापन, कोराना महामारी से बचने के उपाय आदि।
- बाजार, वह स्थान जहाँ पर लोग अपनी आवश्यकताओं की वस्तुओं का क्रय-विक्रय करते हैं।
- बाजार मुख्यत: दो प्रकार के होते हैं- 1. प्रतिदिन खुलने वाले बाजार 2. साप्ताहिक बाजार (हाट)।
- ऐसे बाजार जहाँ पर लोगों की आवश्यकता की प्रत्येक वस्तु एक ही स्थान पर उपलब्ध होती है, शॉपिंग मॉल कहलाते हैं।
- थोक से आशय किसी भी वस्तु को बड़ी मात्रा में खरीदने व बेचने से है।
- ऐसे बाजार जो निश्चित स्थान पर सप्ताह में एक बार लगाये जाते हैं, उन्हें साप्ताहिक बाजार कहते हैं।
- जनसञ्चार संसाधनों के विकास के करण अब हम ऑनलाइन माध्यम से घर बैठे वस्तुओं को अपने लिए मंगवा लेते हैं। आधुनिक बाजार का यह नया विकसित स्वरूप है।

अध्याय-15

समानता एवं लिंग बोध

- समानता से आशय है कि किसी समाज की वह स्थिति जिसमें समाज के सभी लोगों को समस्त सार्वजनिक संसाधनों पर समान अधिकार हो। सामाजिक समानता के लिए कानून के समक्ष समान अधिकार इसकी न्यूनतम आवश्यकता होती है।
- समानता एक व्यापक अवधारणा है, जिसके अन्तर्गत सामान्यत: लोगों के बीच मूलभूत समानता, अवसरों की समानता, स्थितियों की समानता, परिणामों की समानता आदि को देखा जा सकता है।
- मनुस्मृति में सामाजिक संरचना का मूल आधार लोक मंगल की कामना एवं समाज का सर्वतोमुखी विकास को बताया गया है। **लोकानां तु विवृद्ध्यर्थं मुखबाहूरुपादतः। ब्राह्मणं क्षत्रियं वैश्यं शूद्रं च निरवर्तयत्।** (मनुस्मृति 1.31) अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र ब्रह्म की अन्तिम सूक्ष्म सृष्टि हैं।
- ऋग्वेद में ऋषि कहता है, **समानी व आकूति: समाना हृदयाति व:। समानमस्तु वो मनो यथा व: सुसहासति॥** (ऋ.10.191.4) अर्थात तुम्हारे मन, हृदय और संकल्प समान हो सब लोग मिलकर रहो।
- **सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्। देवाभागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते॥** (ऋ.10.191.2) अर्थात् हम सब सदैव एक साथ चले, हम सब सदैव एक साथ बोले, हम सभी का मन एक जैसा हो। हमारे विचार समान हों, हम मिलकर रहें। हम सभी ज्ञानी बनें, विद्वान बनें।
- **अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते सं भ्रातरो वावृधु: सौभगाय॥** (ऋ.5.60.5) इस मन्त्र में स्पष्ट रूप से लोगों में समानता की बात कही गई है, 'हे पृथिवी वासियों न तुमसे कोई बड़ा है और न छोटा तुम सब भाई-भाई हो सौभग्य की प्राप्ति के लिए आगे बढ़ो।
- नागरिकों के मौलिक अधिकारों के रूप में समानता के अधिकारों का उल्लेख संविधान के भाग-2 में अनुच्छेद 14 से 18 के अन्तर्गत किया गया है।
- भारत के सभी नागरिकों, जो 18 वर्ष या उससे अधिक आयु के हैं को मतदान का अधिकार है।
- भारतीय संविधान ने कानून, धर्म, नस्ल, जाति, लिंग, जन्म, स्थान आदि सभी को समान माना है।
- संविधान एक जीवन्त दस्तावेज है, जिसमें देश की जनता और सरकार द्वारा पालन किए जाने वाले नियमों अधिनियमों को निरुपित किया गया है।
- भारत की प्रथम महिला राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवी पाटिल, प्रथम महिला रेलचालक सुरेखा यादव प्रथम महिला लोकसभा अध्यक्ष मीरा कुमार, प्रथम महिला पायलट सरला ठकराल आदि हैं।
- सरकार ने स्थानीय स्वशासन में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए 33% पद उनके के लिए आरक्षित किये हैं।

परिशिष्ट - राज्य, उनकी राजधानी, जिलों की संख्या, क्षेत्रफल एवं जनसंख्या

क्रं.	राज्य	राजधानी	जिलों की संख्या	क्षेत्रफल वर्ग कि.मी. में	जनसंख्या
1.	आंध्र प्रदेश	हैदराबाद	26	2,75,060	8,46,53,533
2.	अरुणाचल प्रदेश	ईटानगर	19	83,743	13,82,611
3.	असम	दिसपुर	35	78,438	3,11,69,272
4.	बिहार	पटना	38	94,163	10,38,04,637
5.	छत्तीसगढ़	रायपुर	32	1,36,034	2,55,40,196
6.	गोवा	पणजी	02	3,702	14,57,723
7.	गुजरात	गाँधी नगर	35	1,96,024	6,03,83,628
8.	हरियाणा	चंडीगढ़	22	44,212	2,53,53,081
9.	हिमाचल प्रदेश	शिमला	12	55,673	68,56,509
10.	झारखण्ड	राँची	24	79,714	3,29,66,238
11.	कर्नाटक	बंगलोर	30	1,91,791	6,11,30,704
12.	केरल	तिरूवनंथपुरम्	14	38,863	3,33,87,677
13.	मध्य प्रदेश	भोपाल	50	3,08,000	7,25,97,565
14.	महाराष्ट्र	मुंबई	36	3,07,713	11,23,72,972
15.	मणिपुर	इम्फाल	09	22,327	27,21,756
16.	मेघालय	शिलांग	11	22,327	29,64,007
17.	मिजोरम	आइजौल	08	21,081	10,91,014
18.	नागालैंड	कोहिमा	12	16,579	19,80,602
19.	ओडिशा	भुवनेश्वर	30	1,55,707	4,19,47,358
20.	पंजाब	चंडीगढ़	23	50,362	2,77,04,236
21.	राजस्थान	जयपुर	33	3,42,239	6,86,21,012
22.	सिक्किम	गंगटोक	04	7,096	6,07,688
23.	तमिलनाडु	चेन्नई	38	1,30,058	7,21,38,958
24.	त्रिपुरा	अगरतला	08	10,49,169	36,71,032
25.	उत्तराखण्ड	देहरादून	13	53,484	1,01,16,752
26.	उत्तरप्रदेश	लखनऊ	75	2,38,566	19,95,81,477
27.	पश्चिम बङ्गाल	कोलकाता	23	88,752	9,13,47,736
28.	तेलंगाना	हैदराबाद	33	1,14,840	3,51,93,978

क्रं.	केन्द्र शासित राज्य	राजधानी	जिलों की संख्या	क्षेत्रफल वर्ग कि.मी. में	जनसंख्या
1.	अण्डमान और निकोबार द्वीप समूह	पोर्ट ब्लेयर	3	8,249	3,79,944
2.	चंडीगढ़	चंडीगढ़	1	114	10,54,686
3.	दादर और नागर हवेली दमन और दीव	दमन	3	603	5,85,764
4.	जम्मू और कश्मीर	श्रीनगर	20	2,22,236	1,25,00,000
5.	राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली	दिल्ली	9	1,483	1,67,53,235
6.	लक्षद्वीप	कवरत्ती	1	32	64,429
7.	पुदुच्चेरी	पुदुच्चेरी	4	492	12,44,464
8.	लद्दाख	लेह	2	1,66,698	2,74,289

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन (म.प्र.)

(शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार)

द्वारा सञ्चालित एवं प्रस्तावित राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन (म.प्र.)

(शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार)

वेदविद्या मार्ग, चिन्तामण, पो. ऑ. जवासिया, उज्जैन - ४५६००६ (म.प्र.)

Phone : (0734) 2502266, 2502254, E-mail : msrvvpujn@gmail.com, website - www.msrvvp.ac.in